KAVYA
FOUNDATION
A Poetry of Life

सृजन संगम

कला और साहित्य का अनूठा मेला

To the Beloved Master
who taught us to
celebrate creativity

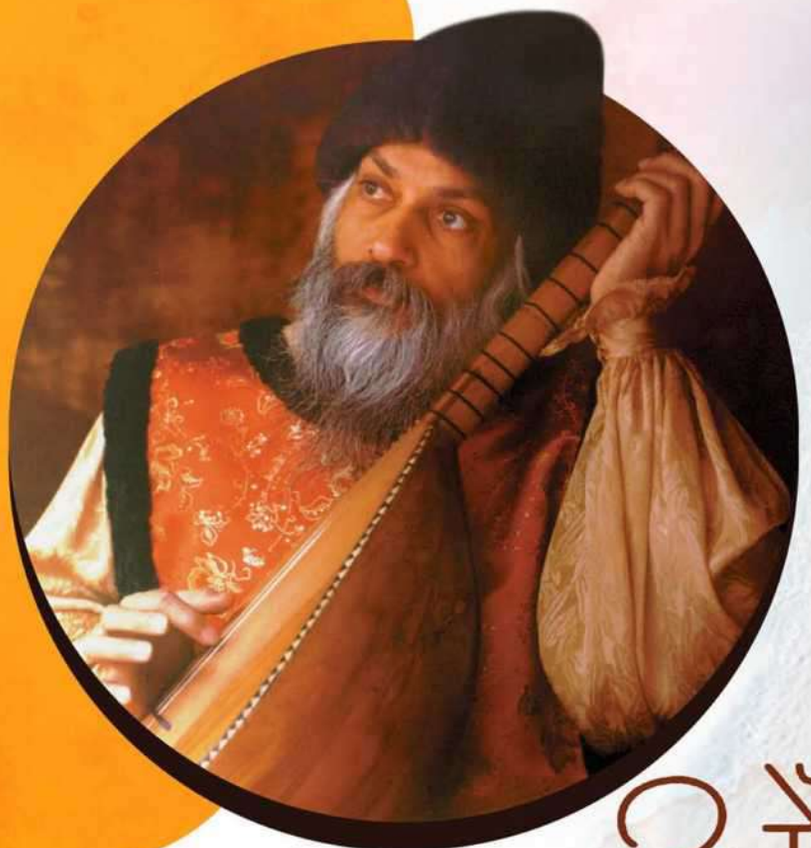

ओशो

आयोजक समिति

1. डॉ अर्चना अग्रवाल
2. श्रीमती दीपा गुप्ता
3. सुश्री रतिका जसानी
4. श्री दीपक बहरे

प्रबंधन समिति

1. श्रीमती दिव्या अग्रवाल
2. श्री प्रशांत विश्वकर्मा
3. सुश्री शिखा भट्टी
4. श्री सूर्यदेव रंजन
5. श्री करनवीर सिद्धू
6. श्री शुभम धीमन
7. सुश्री सुरभि
8. सुश्री ऋषिका शर्मा
9. सुश्री आस्था गुप्ता
10. श्रीमती आकांक्षा ब्राह्माने

पत्रिका डिज़ाइन एवं विषय वस्तु संकलन

1. सुश्री रतिका जसानी
2. श्री दीपक बहरे

सृजन संगम 2022

संपादक

डॉ कपिल चौदहा

काव्या संस्था प्रकाशन

मुद्रक : ताहा प्रिंटिंग प्रेस

विषय-सूची

साहित्यिक रचनाएँ

क्रमांक	रचना	लेखक	पृ. क्र.
1.	राम, तुम आ ही गए!	डॉ कपिल चौदहा	1
2.	कृति व प्रकृति	डॉ विदुला सहजपाल	3
3.	अनुशासन	राम प्रकाश तिवारी	4
4.	Thinking about You	अनमोलजीत सिंह	5
5.	मेरी कविता अभी अधूरी है	मोहित सिंह	6
6.	वीरानों में कितनी ताक़त?	दिव्या अग्रवाल	6
7.	कृष्णा	शुभांगी विश्वकर्मा	7
8.	दादू	कर्मिष्ठा	7
9.	एक अटूट याराना	दीक्षिता शर्मा	8
10.	One Day: Sooner or Later	दीक्षिता शर्मा	8
11.	The Colours of Me	आर्यन ठाकुर	9
12.	आशा	डॉ आशुतोष कुमार	9
13.	मौन साधे रहे तो निगल जाएगा	अनामिका चौकसे	9
14.	One Call and Visit	रुचिका गुप्ता	10
15.	चलो बच्चों, स्कूल चलो	मयंक सेमवाल	11
16.	पिंजरा	महक जोशी	12
17.	The Dream	शिल्पा नौगैरिया	12
18.	Get Up, Warrior	पलवी अरोरा	13
19.	Thoughts	आकाश शर्मा	13
20.	She	मनप्रीत सिंह	14
21.	Solace in Your Arms	कनिका पंघाल	15
22.	बस की बंद खिड़की	अभिनव नागार्जुन	16
23.	नृत्य: कला या संपूर्ण जीवन?	शिखा भट्टी	17
24.	The Unending Slide	जसकीरत कौर	18
25.	आदतें	दीपक बहरे	19
26.	अक्रेशिया	आशुतोष भदौरिया	20
27.	My Father's Failed Experiment	सूर्यदेव रंजन	21
28.	Freeze and Release	श्वेता सुमन	23
29.	The Smile That Breathed New Life in Me	अभिषेक भाऊ	25
30.	The Broken Bow	विवेक तोमर	26
31.	Understanding the Universe through Mathematics	डॉ सारिका वर्मा	27
32.	Power of Meditation	दुष्यन्त कुमार गौलिया	28

फोटोग्राफी/ चित्रकला/ हस्तकला

क्रमांक	कलाकार	पृ. क्र.
1.	अनाईका	56
2.	अभय मिश्रा	5, 16, 26, 32
3.	अभिषेक तुड़हा	56
4.	अर्पना जैसवाल	44
5.	आशी अग्रवाल	44
6.	आस्था डोंगरे	40
7.	आकांक्षा ब्राम्हने	51
8.	आदित्य नेमा	11, 18
9.	आयुष सक्सेना	46
10.	आशीष ठाकुर	34
11.	ऋतिका शर्मा	36
12.	ईशा देवांगन	32, 36
13.	एस. आर. गुप्ता	50
14.	अंकिता प्रथ्यानी	38, 47
15.	अंश जैन	56
16.	कृतिका गुप्ता	53
17.	केशव सिंह	32, 35
18.	कुसुम गुप्ता	49
19.	ख़ुशबू अग्रवाल	43, 45
20.	गरिमा बजाज	15, 37

विषय-सूची

क्रमांक	कलाकार	पृ. क्र.
21.	गायत्री वर्मा	43
22.	गोपाल सिंह	32
23.	टक्कल चतुर्वेदी	31, 34
24.	तनवी	47, 55
25.	तनुश्री पटेल	47
26.	दिव्या जैन	7, 43, 48
27.	दीक्षा	38
28.	देवश्री भार्गव	33, 39
29.	देवांग गुप्ता	56
30.	निष्ठा अग्रवाल	30
31.	नूरदीप कौर	47
32.	पलक धामीजा	54
33.	पवन कुमार	9, 14, 21, 28
34.	पारुल डेंगरे	41
35.	प्रगति खैरा	27, 45
36.	प्रशांत विश्वकर्मा	2
37.	माधवी गोयंका	40, 42
38.	यति गुप्ता	51
39.	रमन गुप्ता	39
40.	रवनीत मान	42
41.	रश्मि चौधरी	38
42.	रश्मि नीखरा	40
43.	रुचिका गुप्ता	44
44.	रेनू अंजोरिया	45
45.	रेनू बाला	41
46.	रोली गुप्ता	52
47.	डॉ विदुला सहजपाल	3
48.	विदुषी विधु	46
49.	विभूति खरया	55
50.	वैभव अग्रवाल	10, 25, 31, 33
51.	वैभवश्री चौहान	36
52.	शालिनी नौगरैया	38, 42
53.	शिल्पा कुरेवाड़	54
54.	शिवानी सिंह	55
55.	शुभम तुड़हा	31, 35
56.	श्रेया खंताल	47
57.	श्लोक पाण्डेय	55
58.	सचिन नौगरैया	8, 20
59.	सतीश चड़ार	13, 19, 24
60.	सत्यांक मिश्रा	31, 32
61.	समर्थ कलसी	39
62.	सिद्धि महाजनकट्टी	48
63.	सुचिता अग्रवाल	46
64.	सुधांशु तिवारी	4, 29
65.	सुमित सिजारिया	33, 35
66.	शैलेष नांदेकर	55
67.	सौम्या गुप्ता	46
68.	संदीप मिश्रा	33
69.	हरअमृत कौर बराड़	12, 33, 35
70.	हर्मन स्लोहर	41, 44
71.	हर्षित शर्मा	48
72.	हिमांशी विश्वकर्मा	44

सुरतरंग

इस श्रेणी के कलाकारों से संबंधित जानकारी के लिए पृष्ठ क्रमांक 57-58 देखें.

सृजन संगम

कला और साहित्य का अनूठा मेला

Srijan Sangam: An Introduction

Srijan Sangam, a confluence of creativity, is a unique project of the Kavya Foundation. It is a funfair of art and literature. We aim to bring together creative heads and hearts from all over the world, and provide them stage to showcase their talents. Television and the internet are flooded with talent shows, but they all intend to find the most talented artist there is. Srijan Sangam, on the other hand, wants to bring out the best artist in each of us.

Srijan Sangam is the celebration of the free spirit of an artist. There is no competition, no judgement, no comparison here. The artists and the literati who took part in this carnival were encouraged to choose the medium of expression they loved most — painting, writing, dance, singing, instrument playing, photography — and speak their hearts. This brought out the essence of creativity and originality in their works.

The response to Srijan Sangam was simply overwhelming. We received entries from 4 countries and 14 Indian states. Over 150 people sent in around 500 works. Except few, all the works are included in the magazine and the videos (for music and dance) as our aim is to give the widest exposure to the maximum number of artists. (The ones left out did not meet the criteria of selection.) Another amazing fact is that the artists come from a wide range of age groups: the youngest 4, the oldest 84. Also, they are from various socio-economic backgrounds and professions. There are students, homemakers, IT professionals, retired officers, business persons, etc.

Such a diversity of individuals and talents has made Srijan Sangam a unique festival whose fragrance is going to delight us for a long time.

Above all, through this festival we want to remind everyone that creativity is the very fountain of beauty and joy, and this fountain is right within us. Keep drinking from it, and you will live a fulfilled life.

Dr. Archana Agrawal

काव्या संस्था: एक यात्रा, एक प्रयोग

डॉ कपिल चौदहा संस्थापक

डॉ कपिल अंग्रेज़ी भाषा एवं साहित्य के एक सेवानिवृत प्रोफेसर हैं. शिक्षण के अलावा इन्हें संगीत, फिल्म निर्माण, एवं फोटोग्राफी में रुचि है. समय समय पर ध्यान और योग शिविर करवाकर इन विषयों के अनछुए पहलूओं से परिचित कराते रहे हैं. विशेष रूप से प्राणायाम पर इनकी समझ बड़ी सूक्ष्म है. इनकी अंतर्दृष्टि जीवन ऊर्जा को लेकर अद्वितीय है.

काव्या संस्था के केवल नाम में ही काव्य नहीं है, बल्कि सोच और कर्म में भी है. सृजन संगम इसका एक अनुपम उदाहरण है. इस पत्रिका के पन्ने पलटते जाइए और आप सृजन यानि creativity के रस और मिठास से भरते जाएँगे. यही रस जीवन का सार है, यही मिठास जीवन की तृप्ति.

एक दशक पहले जब हमने काव्या संस्था की नींव रखी थी तब हमारा एकमात्र उद्देश्य परहित यानि दूसरों की मदद करना था. कैसे? इसका कोई स्पष्ट नक़्शा हमारे पास नहीं था, लेकिन एक बात स्पष्ट थी कि परहित की यह आकांक्षा बड़ी प्रबल थी. आमतौर पर कई लोगों में यह आकांक्षा उठती है, लेकिन जल्द ही मिट भी जाती है. हमारी नहीं मिटी क्योंकि इसमें ध्यान की ऊर्जा शामिल थी. ध्यान की मिट्टी है ही बड़ी निराली; इसमें कोई बीज बो दिया तब अनोखे ही फूल खिलते हैं.

शुरुआती दिनों में संस्था के मुख्य कार्य थे ज़रूरतमंदों की मदद करना, अनाथालयों में बच्चों को पढ़ाना, उनके लिए पठन सामग्री, कोचिंग की व्यवस्था करना, इत्यादि. लेकिन जैसे-जैसे ध्यान की दृष्टि पैनी होती गई, हमें यह महसूस होता गया कि मनुष्य की आवश्यकताएँ केवल रोटी, कपड़ा, और मकान तक ही सीमित नहीं हैं; बल्कि कला, विज्ञान, साहित्य, आध्यात्म, पर्यावरण प्रेम, खोज, अनुसंधान का भी विकास करना ज़रूरी है.

इसके बाद हमने योग और ध्यान शिविरों का आयोजन किया, फिल्में बनाईं, पौधारोपण और वन सफ़ाई अभियान किए, वन्यजीवों के लिए जलाशयों का निर्माण कराया, अंग्रेज़ी व्याकरण पर वीडियो तैयार किए, कविता लेखन पर कक्षाएँ कीं. इतना ही नहीं, अपनी टेलिस्कोप से ब्रह्मांड के कुछ अजूबों की तस्वीरें भी लीं और लोगों के साथ साझा करके उनके अंदर अंतरिक्ष के बारे में उत्सुकता पैदा की. इन शब्दों को लिखते-लिखते मैं याद कर पा रहा हूँ उन अनमोल क्षणों को जब हमारी तस्वीरों को देखकर लोगों की आँखें आश्चर्य से चमक उठती थीं.

काव्या संस्था का सबसे अमूल्य अनुभव यह रहा है कि यह एक संस्था मात्र न होकर एक परिवार का रूप धारण कर रही है. ध्यान ने हमें सिखाया है कि अपने-पराए का भेद एक डरे हुए और स्वार्थी मन की उपज है. जब पूरे पृथ्वीवासी ही हमारा परिवार बन सकते हैं, तब किसी एक परिवार, समाज, धर्म, समुदाय तक ही सीमित क्यों रहा जाए? और इस परिवार में पेड़, पौधे, पशु, पक्षी, चाँद, तारों को भी शामिल क्यों न किया जाए?

काव्या परिवार की यात्रा अनवरत चल रही है. अस्तित्व करे हम सभी पर सृजन और आनंद की फुहार यूँ ही पड़ती रहे.

राम, तुम आ ही गए!

डॉ कपिल चौदहा

जन्मों-जन्मों से तुम्हारी बाट जोहती थी मैं.
कितनी सदियों से तुम्हारी राह देखती थी मैं.
'क्या राम आएँगे?' मैं स्वयं से पूछती थी.
तुम तो अज्ञात थे, अज्ञात से आना था तुम्हें.
तुम जो असीमित थे, मेरे दिल में समाना था तुम्हें.
क्या ये सम्भव था?
क्या ये सम्भव था कि इक बीज की सदा सुनकर सागर बादल में बदलकर उसे मिलने पहुँचे?
क्या ये सम्भव था कि बेजान घुँघुरुओं को कभी स्वयं नटराज अपने नृत्य से झंकृत कर दे?
कभी प्रश्नों की पहेली, कभी शंकाओं के शूल,
कभी उलझन, कभी चुभन,
मैं विकल और घायल,
राह खोजती फिरती.
कोई नहीं था यहाँ राह दिखाने वाला.
कोई नहीं था यहाँ साथ निभाने वाला.
तो मैंने चुन लिया तन्हाई को अपना साथी.
और एक वीरान बयाबान के आँचल के तले,
प्रतीक्षारत हुई तेरे मिलन का स्वप्न लिए.
हर सुबह छोटी सी कुटिया के हर एक कोने को
तेरी अनुभूति की सुगंध से भरा मैंने.
प्रेम के बेर चुने, श्रद्धा के होंठों से चखे,
और फिर द्वार बैठी राह तुम्हारी तकती.
कहीं कोयल ने कूक दी तो लगा तुम आए!
कहीं हवा में झूमे पेड़ लगा तुम आए!
कहीं मस्ती में नाचे मोर लगा तुम आए!
कहीं हिरणों की कुलाँचों से लगा तुम आए!
कहीं बरसात की बूँदों में लगा तुम आए!
कहीं तूफ़ानों की हलचल में लगा तुम आए!
पर तुम नहीं आए,
राम, तुम नहीं आए.
थकन से चूर हुई तेरी प्रतीक्षा करते.

अब कोई न था जो तेरी प्रतीक्षा करता.
फिर तुम भी न थे अब जिसकी प्रतीक्षा होती.
बस प्रतीक्षा ही रही शेष,
एक शून्य प्रतीक्षा.

इस शून्यता की कोख में
जो विश्राम में उतरी,
तो मिट गई मैं,
तो खो गई मैं,
और मिल गए तुम.
राम, आ गए तुम!
राम, तुम आ ही गए!

(उक्त कविता आध्यात्मिक यात्रा का एक प्रतीकात्मक चित्रण है जिसमें शबरी-रूपी साधिका राम-रूपी बुद्धत्व के लिए संघर्ष करते हुए परम अनुभूति को प्राप्त होती हैं.)

2

Photo: Prashant Vishwakarma

कृति व प्रकृति

डॉ विदुला सहजपाल

नारियल की फाँक सी
गहरी भूरी टहनी, श्वेत तहों में दबी
करवट ली मौसम ने
गलीचा बदला शिशिर ने
हुई सफ़ेद सतह धरा की

वृक्ष शिखिर दानवीर
दी भेंट बर्फीली क्रमवार
बिछी धरा प्रथम,
क्रमशः तना, टहनियाँ
सबने पायी देन
शिखिर ठूँठ ही प्रसन्न

निःशब्द सक्रिय प्रकृति,
कब सामान बटोरा, कौन जाने
पवन, मेघ, वाष्प कण, शून्य ताप
रंग, द्रव्य गुण, सौंदर्य वितान
हल्के हाथों
एक एक बर्फ़ीला फाहा लिए
किया चित्रित हर कण
सजें ओस कण पत्तों पर जैसे
सींचे धरा बूँद बूँद वर्षा जैसे
दमकाएँ किरणें हर कोना जैसे

उद्यमी प्रकृति
नत मस्तक पवन, मेघ, वाष्पकण, शून्य ताप
करबद्ध वृक्ष, टहनियाँ, धरा पटल, सतहें
किया समर्पण सबने
हुई कलाकृति मुखर, सम्पन्न

निपुण प्रकृति
तुच्छ मानव
अपूर्ण, निर्बल, विवश
न रचना कर पाए ऐसे
समाहित भी न कर पाए
विस्तृत सौंदर्य विस्तार
और फिर कहाँ प्रकृति जैसा
बिन आडम्बर कर्म आधार
निःस्वार्थ, सतत, निश्छल उपचार

Photo: Dr. Vidula Sahajpal

अनुशासन

राम प्रकाश तिवारी

निशा-दिवा के पृष्ठ पर्ण पर,
रविकर-शशिकर स्याही से.
लिखती रहती प्रकृति निरंतर,
पंचतत्व की बाती से.
जग की मिथ्या माया ने,
सबको भीषण फाँसा है.
जितना पीते उतनी बढ़ती,
नित-नित अमर पिपासा है.

कौन गरल या अमृत का है,
बिना विचारे हम प्याले.
जीना है बस पीते जाते,
हम हैं ऐसे मतवाले.
रहे सदा हम स्वार्थ साधते,
किया न परहित का चिंतन.
किया न पीड़ित उर घावों में,
मृदुवाणी का अभिसिंचन.

जगत जन्म ले पाने के हित,
अनगिन कसमें खाई हैं.
जन्म लिया, हम धरती आए,
लेकर कौन बुराई है?
जगती तल पर आकर ही हम,
सब कुछ अर्जित करते हैं.
हम करते मनमानी वह जो,
गुरुजन वर्जित करते हैं.

Photo: Sudhanshu Tiwari

Photo: Abhay Mishra

Thinking about You

Anmoljit Singh

Oh! I wished you knew
I need you here.
Not alone on your wall,
Wasting up these tears.
Deep down you're the sun, the moon, and the stars
kneeled down in prayers.

There's a picture I drew.
You smiled into a jest.
Should I still love you?
While you're a work in progress,
don't colour me a farewell.
I'm still here,
come and caress all walks, talks, and letters.

And I know it's a lot
when your thoughts bleed.
Just look at you, you're so blessed.
Alive on the street, waiting to let go of everything.

These days I think of you.
These nights can't make me sleep.
You call them friends?
They disappear without a note, without a clue!
I wished you knew what I know
that these times are just stairs
even if I'm not here.

All things that you fought,
people who made you weep,
I know it's a lot.
But I'm still here to bleed to
please you.

मेरी कविता अभी अधूरी है

मोहित सिंह

मेरे लफ़्ज़ उड़ा के ले गया कोई परिंदा है,
मेरा शायर फिर भी मरा नहीं
अभी ज़िंदा है.
मेरे जज़्बात कुछ लिखना चाहें,
पर हाथों को रोक रही मजबूरी है.
मुझे एक ख़ंजर और मार, मेरे दोस्त,
मेरी कविता अभी अधूरी है.

वो दौर था, भरी थीं किताबें मैंने.
पर तेरे धोखे को हो गयी अब बरसी है.
मेरी क़लम भी काफ़ी मुद्दत से
काग़ज़ पर आग लगाने को तरसी है.
शब्दों का पनप रहा अब तो ज्वालामुखी
जिसका फूट के छप जाना ज़रूरी है.
मुझे एक ख़ंजर और मार, मेरे दोस्त,
मेरी कविता अभी अधूरी है.

मुझ दरिया की छीन आज़ादी ले गए.
मुझे समंदर में न बहने दिया.
मेरे काँधे पे रखा था सर जिसने
उसी ने मेरे काँधे पे सर न रहने दिया.
मेरे ज़ख़्मी दिल से आधे अल्फ़ाज़ बह गए,
अब तो ख़ाली नाम की बची मशहूरी है.
मुझे एक ख़ंजर और मार, मेरे दोस्त,
मेरी कविता अभी अधूरी है.

वीरानों में कितनी ताक़त?

दिव्या अग्रवाल

सोचों के पलड़ों के ऊपर
जब भी देखा रखकर मैंने,
वीरानों में कितनी ताक़त?
वीरानों में इतनी ताक़त?

खंडहरों के बल पर जाने,
हमने तुमने,
बुलंदियों के बीते क़िस्से.
उखड़े दर से ही मिल पाए,
हमको तुमको,
धरोहरों से मंडित हिस्से.
बीता कल हो बंदी जिसमें
इस जर्जर में उतनी ताक़त?
वीरानों में कितनी ताक़त?

संघर्षों में अस्तित्वों के,
उसने अपनी आबादी दी.
उत्सर्गों की बनी श्रंखला,
हमको तुमको आज़ादी दी.
ये ही तो थी, ये ही वो है,
अनजानी भूगोली ताक़त!
वीरानों में इतनी ताक़त?

इतिहासों की मौन स्वीकृति
उन झिंगुरों के स्वर गानों को,
उन गीतों को, उन बीतों को,
स्व-अर्पित सब बलिदानों को.
मौनों की स्वर्णिम आभा से
शब्दों को झुठलाती ताक़त!
वीरानों में कितनी ताक़त?
वीरानों में इतनी ताक़त.

Photo: unsplash.com

Painting: Divya Jain

कृष्णा

शुभांगी विश्वकर्मा

जीवन के हर पल, हर क्षण, बस कृष्णमयी हो जाऊँ मैं.
हर ओर जहाँ तक मन दौड़े, बस कृष्णा को ही पाऊँ मैं.
अपने मन की गहराई में, बस कृष्णा को गहराऊँ मैं.
मैं दासी, कृष्णा, अब तेरी, तेरे चरणों में स्वर्ग को पाऊँ मैं.
तेरे प्रेम समुंदर में, कृष्णा, इक बूँद जैसी घुल जाऊँ मैं.
कृष्ण, निहारूँ यूँ तुझको, ख़ुद अपने को बिसराऊँ मैं.
तुम मिले जन्म-जन्मांतर में, अब बंधन से मुक्ति पाऊँ मैं.

दादू

कर्मिष्ठा

अब कोई नहीं है, दादू, मेरे आँसू पोंछने के लिए!
रूठ भी जाऊँ, तो मेरे नखरे उठाने के लिए!
अब कोई नहीं है, दादू, लोरी सुनाने के लिए!
नींद न आए, तो गोद में सुलाने के लिए!
अब कोई नहीं है, दादू, कहानी सुनाने के लिए!
बिखू बिखू कह कर मुझको प्यार से बुलाने के लिए!

फिर कहाँ चले गए, दादू, इस दुनिया को छोड़कर!
मुझे अपनी यादों के साथ तन्हा छोड़ कर!

लौट आओ, दादू, मेरी ख़ुशी के लिए!
प्यार से एक बार गले लगाने के लिए!

एक अटूट याराना

दीक्षिता शर्मा

मैं तो भाग रही थी ख़ुद से,
ख़ुद को ख़ुद में समेटे.
फिर न जाने कहाँ से
एक हवा का झोंका आया,
जो मेरे ललाट की शिकन को
पल में उड़ाकर ले गया.
हालाँकि अनजाना था वो मेरे लिए
शायद हक़ीक़त की दुनिया से परे.
लेकिन न जाने कब और क्यों
वो मुझे अपना सा लगने लगा?
और छोटी-छोटी अठखेलियों से
बड़ी-बड़ी शरारतों तक
मेरा हाथ थामे चलता रहा.
दिन बीते, रातें गुज़रीं,
कभी हँसी मज़ाक़ में,
कभी आँसुओं के सैलाब में,
लेकिन वो याराना यूँ ही चलता रहा;
और ज़िंदगी का तराना सुनाता रहा.
जब कभी अतीत में झाँकती हूँ,
तो ख़ुद को उसी चौराहे पर
विचारों में डूबा हुआ पाती हूँ
जहाँ से एक सही क़दम ने
ज़िंदगी की दिशा बदल दी थी.
लगता है ख़ुदा ने मुझे
मुझसे मिलाने के लिए
उसकी मदद ली थी.
शुक्रिया ख़ुदा का करूँ
या उस हवा के झोंके का
जो बरसों पहले उफनते तूफ़ान को
शांत करके चला गया था?
मानो मुझे ख़ुद से लपेटे
जीने की नई वजह दे गया था.

One Day: Sooner or Later

Dikshita Sharma

Eventually, many centuries have passed
in the hopeless desire to uncover this hidden pain.
And, in the shower of unpredictable love,
the barren land of my restless soul will be nourished
again.
Maybe today or tomorrow, the blank pages
of the unwritten book will shine
with pearl-like words.
Along with the doors of unlocked cages,
locked with a secret code, will reopen
for imprisoned birds.
The day is about to come
which is expected in the unexpected world,
perhaps like a fraud.
So, call up all your subdued kith and kin
to kill that blood-soaking trauma
with your sword.

Photo: Sachin Nougariya

The Colour of Me

Aryan Thakur

If you don't feel what I feel,
you're not kind enough.
Don't think how I think?
Not wise enough.

Be like me
or no point in being.
See how I see it
or no point in seeing.

Keep following me
night and day.
Walk my walk
or stay away.

Be painted in my colour
or live in shades.

आशा

डॉ आशुतोष कुमार

जो किरणमयी रोशनाई से
एक लकीर आँकी गई है
शिरोरेखा है
यह लकीर.

इसमें सबसे पहले
लिखा जाएगा- 'अ'
फिर एक
खड़ी पाई.

फिर शहद वाला- 'श'
फिर एक और
खड़ी पाई, यानी
कुल जमा दो पाई.

स्याह रात के
श्यामपट पर चमक उठेगा
एक नई विश्व-कविता
का शीर्षक.

मौन साधे रहे तो निगल जाएगा

अनामिका चौकसे

मौन साधे रहे तो निगल जाएगा,
या कभी शोर बनकर मचल जाएगा.

यूँ रहे जो ख़फ़ा ज़िंदगी से कभी,
क्या पता साँस का साथ टल जाएगा.

आज तेरे लिये ये जहाँ जान दे,
जान लेकर यही कल निकल जाएगा.

मर गया नीर आँखों तले आज कल,
याद रख कल वही दृग सजल जाएगा.

है कठिन दौर ख़ुद को सँभालो, अनु,
कल तिरा ख़ुदबख़ुद ही सँभल जाएगा.

Painting: Pawan Kumar

One Call and Visit

Ruchika Gupta

If heaven had a telephone,
I would call you everyday and
would tell you all the little things
I always wanna say.
If heaven had visiting hours,
I would come everyday.
I wanna make sure you are OKAY.
I wanna love you all the possible ways I can.
I wanna see you happy with a glowing face.
You know what makes me sad?
This DISTANCE and SPACE.
I wanna play with you as we played before.
I wanna take care of all your health.
I wanna share all the secrets I have kept.
I wanna comb your hair once more.
I wanna hug you so tight and never let you go far.
I wanna hold your hand forever.
I wanna feel your presence, that touch and smile.
I wish these hours go by slow.
I wish I could have you back in my life.
But God obviously needs you more than I.
And it's time to go back home.

Photo: Vaibhav Agrawal

Painting: Aditya Nema

चलो बच्चों, स्कूल चलो

मयंक सेमवाल

चलो बच्चों, स्कूल चलो,
तुम बड़े हो गए हो.
अपने नन्हे पैरों पर अब,
तुम खड़े हो गए हो.

चलो बच्चों, स्कूल चलो,
तुमको बड़ा एक दिन होना है.
सीख लो जीने का तरीक़ा,
वरना ज़िंदगी भर रोना है.

चलो बच्चों, स्कूल चलो,
तुमको भी एक होड़ में लगना है.
अलग चेहरे कैसे बनाते हैं,
तुमको ये ही सीखना है.

चलो बच्चों, स्कूल चलो,
तुम्हारी मुस्कान उड़ानी है.
जो पट्टी इस दुनिया ने पढ़ी है,
वो ही तुम्हें पढ़ानी है.

चलो बच्चों, स्कूल चलो,
सीख लो कैसे मारनी है बाज़ी.
नक़ल सीख लो, छल सीख लो,
सीख लो ठगी और जालसाज़ी.

चलो बच्चों, स्कूल चलो,
सबको पीछे छोड़ना है.
दूसरों की ख़ुशी में न हँसना,
उनसे ही तुमको लड़ना है.

चलो बच्चों, स्कूल चलो,
तुम्हारी अपनी न कोई पहचान है.
तुम वो ही करोगे, जो हम कहेंगे,
क्योंकि हम ही तुम्हारे भगवान हैं.

चलो बच्चों, स्कूल चलो,
तुम्हें बड़ा आदमी हमें बनाना है.
तुम हो हमारे ही सिक्के,
तुम्हें समाज को हमें दिखाना है.

चलो बच्चों, स्कूल चलो,
विद्या बिकती है अब हाट में.
बड़े से बड़े स्कूल में तुम्हें भेजेंगे,
हम अपना पेट काट के.

चलो बच्चों, स्कूल चलो,
मासूमियत का कपड़ा उतार दो.
अगर जीतना है इस दुनिया में तो,
अपने अंदर का बच्चा मार दो.

पिंजरा

महक जोशी

आज़ादी प्यारी होती है सबको,
पिंजरे में न कोई रहना चाहता है.
पर पंछी पिंजरे वाला कैसे उड़े?
लोहे के पिंजरे को वो कैसे तोड़े?

आसमान वो देख रहा है बैठकर,
तारों से कह रहा है वो रातभर,
कि, "उड़ न मैं पाऊँगा,
इस पिंजरे में रह जाऊँगा.
आसमान सारा खुला है,
फिर भी पंख न लहरा पाऊँगा."

मनमर्ज़ी कैसे करे वो?
कैसे अपनी मंज़िल बनाए?
इस क़ैदख़ाने से कैसे बाहर आए?
कैसे उड़े वो आसमानो में?
कैसे ख़ुद को बेहतर बनाए?
जब पिंजरे में है ज़िंदगी,
कैसे वो आज़ादी के तराने गाए?

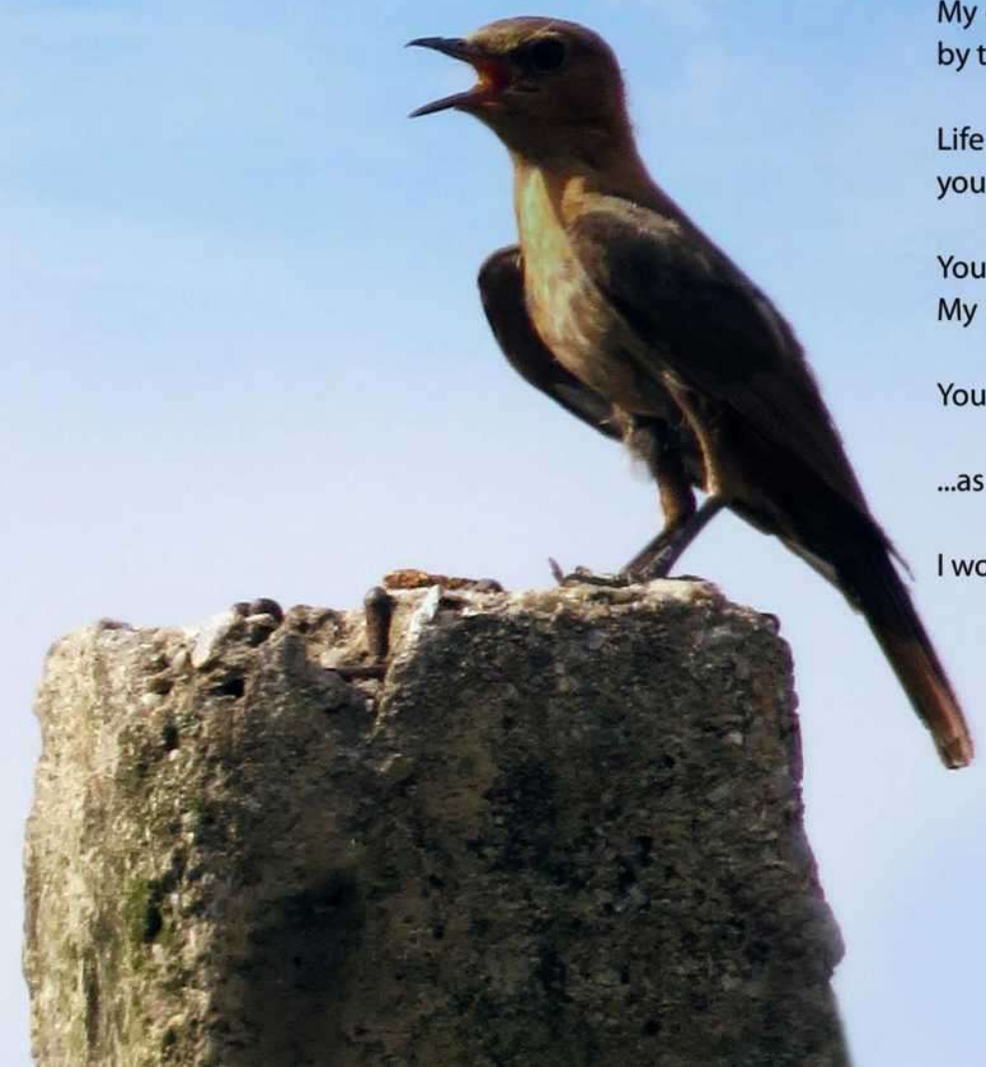

The Dream

Shilpa Naungariya

I remember this dream that I had.
I flew away from these walls.

My eyes opened wide,
by the glimpse of you taking me on.

Life in new sky with
your wings flying high!

You touched and it felt so real.
My season changed, breeze to storm.

You said just, "Let it be, it's alright!"

...as we ran away...

I woke up behind these walls.

Photo: HarAmrit Kaur Brar

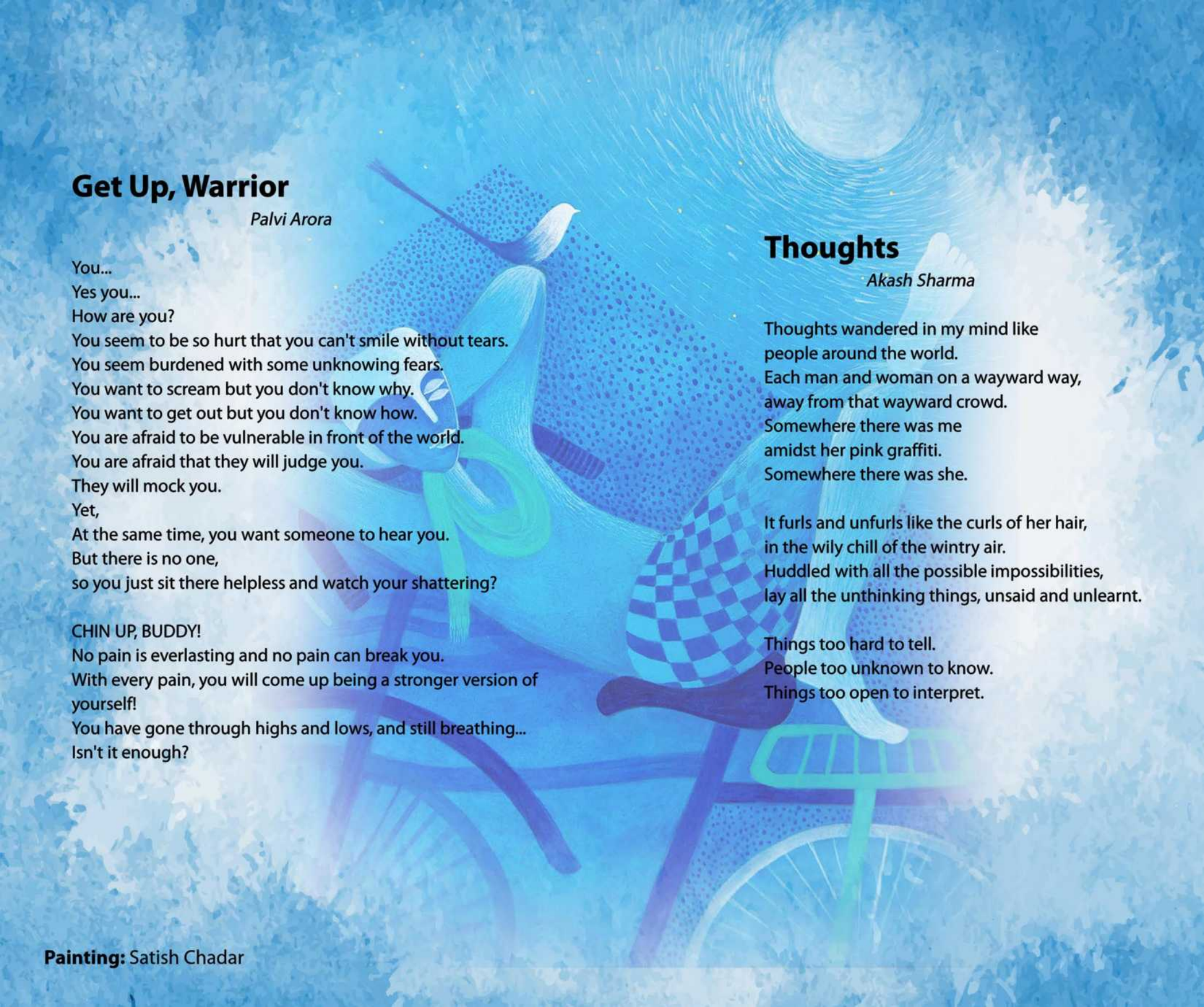

Get Up, Warrior

Palvi Arora

You...
Yes you...
How are you?
You seem to be so hurt that you can't smile without tears.
You seem burdened with some unknowing fears.
You want to scream but you don't know why.
You want to get out but you don't know how.
You are afraid to be vulnerable in front of the world.
You are afraid that they will judge you.
They will mock you.
Yet,
At the same time, you want someone to hear you.
But there is no one,
so you just sit there helpless and watch your shattering?

CHIN UP, BUDDY!
No pain is everlasting and no pain can break you.
With every pain, you will come up being a stronger version of yourself!
You have gone through highs and lows, and still breathing...
Isn't it enough?

Thoughts

Akash Sharma

Thoughts wandered in my mind like
people around the world.
Each man and woman on a wayward way,
away from that wayward crowd.
Somewhere there was me
amidst her pink graffiti.
Somewhere there was she.

It furls and unfurls like the curls of her hair,
in the wily chill of the wintry air.
Huddled with all the possible impossibilities,
lay all the unthinking things, unsaid and unlearnt.

Things too hard to tell.
People too unknown to know.
Things too open to interpret.

Painting: Satish Chadar

SHE

Manpreet Singh

They say, "'tis your past deeds, your past life,
That serves you agony, tears you from inside."
For I must've been cynical, unfaithful, and tyrant.
But I ain't remember doing nothing.
However, I concede my being rude.
But what has she done ever to defy you
that you're so harsh, so cruel?
Has she deceived someone or ever cursed?

One said, "She is unblessed, an impediment.
She's killed her father, devastated the pedigree."
The spears of her words pierced my heart, for she is a girl.
Is this her crime?
The God is no God, the mother is no mother.
Both ditched, showed no mercy to the fallen Angel.
But I'm happy because she knows not anything.
Grieves not on her loss.
She is playing and happy.

Painting: Pawan Kumar

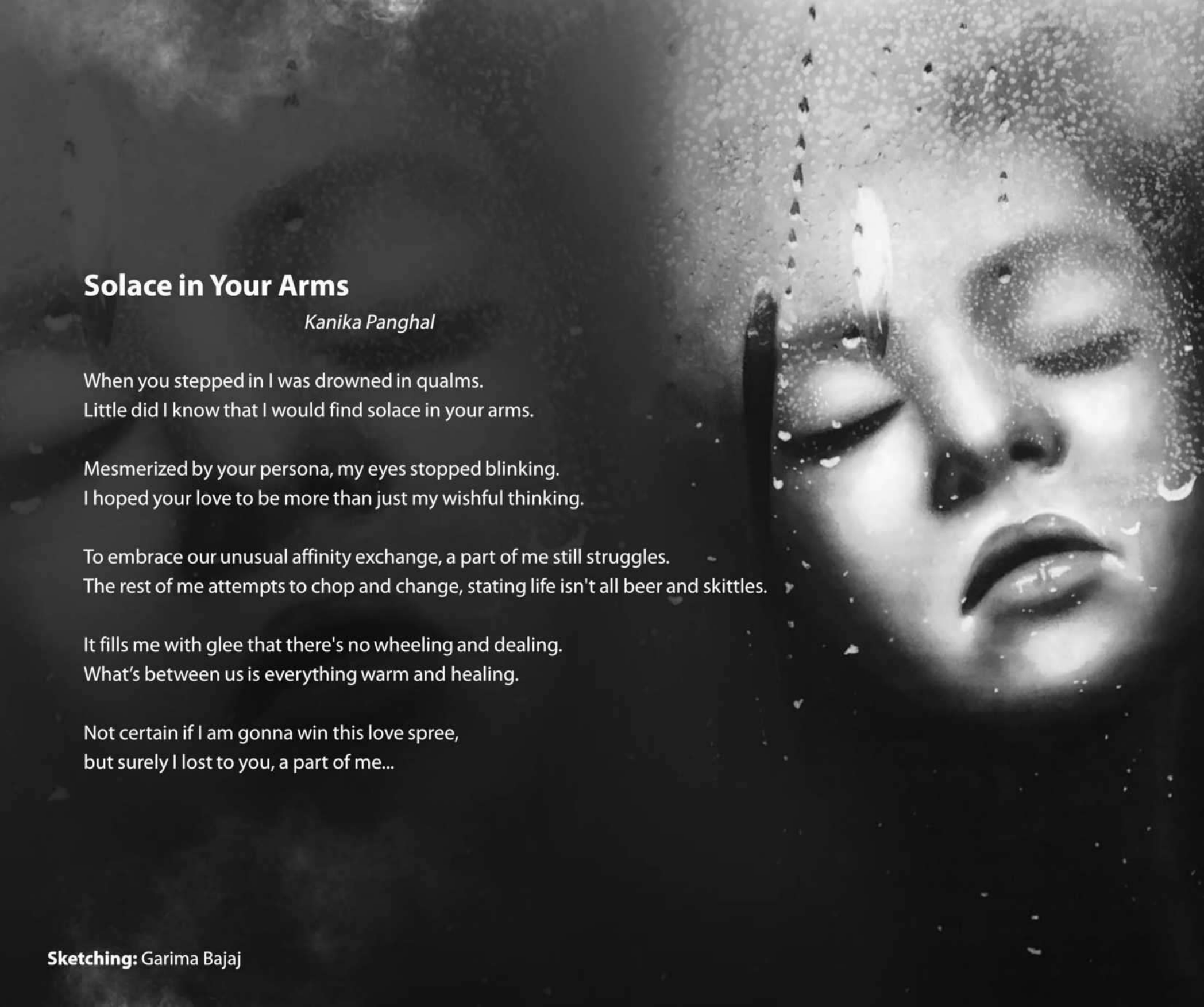

Solace in Your Arms

Kanika Panghal

When you stepped in I was drowned in qualms.
Little did I know that I would find solace in your arms.

Mesmerized by your persona, my eyes stopped blinking.
I hoped your love to be more than just my wishful thinking.

To embrace our unusual affinity exchange, a part of me still struggles.
The rest of me attempts to chop and change, stating life isn't all beer and skittles.

It fills me with glee that there's no wheeling and dealing.
What's between us is everything warm and healing.

Not certain if I am gonna win this love spree,
but surely I lost to you, a part of me...

Sketching: Garima Bajaj

बस की बंद खिड़की

अभिनव नागार्जुन

बस की बंद खिड़की से हवा आने का इंतज़ार करते रहे.
हम बेसुध बाहर ताकते रहे.
बाहर ज़माना था सारा, हँसता हुआ एक तरफ़,
ऊँची इमारतों को देख शहर की अमीरी का हम दीदार करते रहे.

अजीब धुँधलापन था आँखों में,
बड़े मकान देख आँखें जलती रहीं.
दूसरी तरफ़ एक बच्चा भीख माँग रहा था,
तो उसको चिढ़कर देखने का काम ले लिया.

गहरा सा दर्द हुआ ज़हन में
जब लगा कि ख़ुद के पास इतना बड़ा घर न होगा.
अगले ही सेक्टर जब बस पहुँची,
तो घरों का क़द थोड़ा छोटा होता गया.

अब दिल में दर्द नहीं हो रहा था,
मन बाहर देखने का थोड़ा कम हो रहा था.
मगर इंसानी पैसों का प्रदर्शन देख,
आँखें कहीं और जा ही नहीं रहीं थीं.

अगले सेक्टर आते आते,
घरों का सीमेंट तंबू के बाँस में तब्दील हो गया.
कम सँवरे लोग और नंगे बच्चे हर तरफ़ दिखने लगे.
मैंने एकदम से आँखें नीचे कर अपना फोन निकाल लिया.

Photo: Abhay Mishra

Photo: unsplash.com

नृत्यः कला या संपूर्ण जीवन?

शिखा भट्टी

अक्सर अपने से एक सवाल पूछती हूँ: नृत्य क्या है? आपमें से बहुत लोग नृत्य की परिभाषा को कला, हर्ष, उल्लास जैसे शब्दों से जोड़ते होंगे. लेकिन क्या केवल ख़ुशी और उल्लास से झूम उठना ही नृत्य है? क्या चंद शब्द इस महान कला को परिभाषित करने में सक्षम हैं? मैं जितना इस प्रश्न को विचारती हूँ, उतना ही गहराई में चली जाती हूँ.

बचपन में यूँ ही एक दिन सुर और ताल पर पैरों का थिरकना हो गया. भोलेपन में संगीत और नृत्य का रस इस तरह अंदर समा गया कि मैं हर जगह, हर समय, हर चीज़ में उस रस को ढूँढने लगी. छोटी थी, नृत्य के अन्य भावों से परिचित न थी, लेकिन एक आनंद भाव मेरे अंदर विकसित हो चुका था. ऐसा आनंद जो मुझे कला की तरह ही नहीं, बल्कि एक महावरदान के रूप में भी मिला.

जैसे-जैसे बड़ी हुई नृत्य के साथ संबंध और गहराता गया. आनंद भाव ने प्रार्थना का रूप ले लिया. जिस प्रकार हम प्रतिदिन साफ़ मन से आनंदपूर्ण होकर प्रार्थना करते हैं, उसी तरह नृत्य मेरे लिए पूजा हो गया. जिसके बाद एक अलग-सी ऊर्जा महसूस होती. सब खिला-खिला व सुंदर प्रतीत होने लगा. मेरी इस प्रार्थना अभ्यास से सौंदर्य भाव का जन्म हुआ. हाथ की मुद्राएँ, पैरों की थाप, आँखों के तेवर, कमर का लचकना, हर अदा व दिखावट मेरे रोम रोम में बसती गई.

इन भावों से अवगत हुई थी कि अचानक एहसास हुआ कि नृत्य केवल हर्षोल्लास से संबंधित ही नहीं, बल्कि मेरे अंदर उत्पन्न हुए हर भाव का आईना है. दुःख में नृत्य, सुख में नृत्य, क्रोध में नृत्य, प्रेम में नृत्य, द्वेष में नृत्य, कण-कण में नृत्य, हर क्षण नृत्य. देखते ही देखते नृत्य भगवान हो गया; हर कण में, हर क्षण में उपस्थित. मेरा नृत्य नटराज का तांडव, माँ सरस्वती की वीणा, कृष्ण की मुरली हो गया. सत्यम शिवम् सुंदरम. मेरा नृत्य भी परम सत्य व सुंदर हो गया.

सृष्टि के हर कोने में उस परम शक्ति का वास है. फूलों के खिलने में, फलों के लगने में, पत्तों के झड़ने में, हर ऋतु में, समुद्र की लहरों में, आँधी तूफ़ान में, सूरज की तपिश में, चाँद की रोशनी में. नृत्य केवल कला ही नहीं, भाव है, पूजा है, परम शक्ति है, वरदान है. मेरा नृत्य मेरा संपूर्ण जीवन है.

The Unending Slide

Jaskirat Kaur

Enjoying that one day at Horrorland, out of those ten slides, I didn't know why I and my friend Perk chose the one that said, "Don't pick the doom slide or you'll slide forever and ever." Or was it that the slide chose us?

As we entered, the slide turned out to be super fast initially, and soon I was being crushed and masticated by some white giants, extracting all my blood out. After which came a pink hairy man who sprayed a nectar on me that assembled me into a bolus. But soon he pushed me further down the slide that was even steeper.

Soon I found Perk again, and together we slid down in endless darkness and silence. Perk shouted, "Kit, are you there?" Before I could answer, I felt like the walls closing in and we getting compressed. I was having my life's worst ever sliding experience. Maybe this was really the last slide I'd ever go down to.

Moments later we landed in a room which had soft and bumpy walls. It was fiery hot in there. Soon I felt the room was getting filled with some caustic water that was almost ripping my skin off. I saw my skin loosening and blood spurting out, and I was getting drowned in that hot water that was just about to take my breath away. I even saw aliens getting killed by that caustic solution. Only God knows what that terrific thing was!

After getting churned in that hot water and screaming to death for long hours, a door opened just beneath me on the floor, and led to another dreadful slide. Turning my eyes back to Perk, I saw him moving backwards up the slide, being pulled by someone. After it, I heard a voice as loud as thunder that shook me totally from within.

Then I saw the door behind me closing and I couldn't see or hear Perk anymore. And I was being carried ahead where I saw watery juices being poured on me, all on my way down, from various windows surrounding me. The slide became more loopy.

Then I saw my body parts getting ripped apart: my hands, feet, legs, arms, trunk, head, eyes, ears, nose, mouth, hair were all dislodged. They began floating in space, and sliding together down into wider slide zones. It further tried to break me down and suck out all that I had in my veins. A slimy fluid led me down faster by lubricating all my parts.

Then I entered into a small storage room along with all my segments getting collected for some time. But soon I saw movements in the walls of rooms that led me into a small door. The door opened to propel me into a sharply-illuminated space, and I realized that I was out of the slide. But I was in a bad, smelly, wet, but firm and lumpy state just like a sausage, getting dropped into a smelly pond.

Painting: Aditya Nema

Painting: Satish Chadar

आदतें

दीपक बहरे

अक्सर जब हम अपनी आदतों से रूबरू होते हैं, तो उनसे दूर होने की जगह उनमें ही रम जाते हैं. ऐसा दिन में कई बार, कई आदतों के साथ होता है. हम अपनी आदतों से दूरी क्यों नहीं बना पाते हैं?

मेरा मानना यह है कि सबसे पहले हमें अपनी आदतों से लड़ना छोड़ देना चाहिए क्योंकि हमारा दृढ़ निश्चय इतना मजबूत नहीं होता है कि वह हमारे मन और शरीर को नियंत्रित कर पाए. अगर हम इस अवस्था में किसी चीज़ का निश्चय/संकल्प करते जाएँगे, तो वे हमेशा ही टूटेंगे; और आदतें कभी नहीं बदलेंगी. कमज़ोर दृढ़ निश्चय अगर मन से लड़ेगा, तो हमेशा मुँह की ही खाएगा.

आदतों को बदलने का सबसे आसान तरीक़ा यही है कि उनसे लड़ना छोड़ दो, और अपने दृढ़ निश्चय को मजबूत कैसे करना है इस बारे में काम करना शुरू करो.

अब प्रश्न आता है कि दृढ़ निश्चय को मजबूत कैसे किया जाए? इसकी एक विधि योग है. योग एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें आप अपने शरीर को न केवल विशेष मुद्राओं में मोड़ते हैं, बल्कि धीरे-धीरे आप उसे एक प्रकार का अनुशासन सिखाने की कोशिश करते हैं. कुछ समय बाद आपका शरीर नियंत्रण में आने लगता है. जैसे-जैसे शरीर नियंत्रण में आता है, वैसे-वैसे मन अपनी पकड़ कम करता जाता है.

अक्रेशिया

आशुतोष भदौरिया

एक चीज़ जो हम सभी चाहते हैं वह है सफलता. लेकिन जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित सफल व्यक्तियों की यदि सूची बनाई जाए, तो यह बहुत छोटी सी होगी. क्यों? इस मूलभूत समस्या का विवरण दुर्योधन ने महाभारत में प्रस्तुत किया है:

जानामि धर्मं न च में प्रवृत्तिः
जानाम्यधर्मं न च में निवृत्तिः

अर्थात मैं जानता हूँ कि मुझे क्या करना चाहिए, लेकिन वह मैं कर नहीं पाता; और मैं जानता हूँ कि मुझे क्या नहीं करना चाहिए, लेकिन उसे छोड़ने की सामर्थ्य मुझमें नहीं है.

क्या यह हम सभी की समस्या नहीं है?

इस मनोदशा को यूनानी भाषा में अक्रेशिया कहा जाता है जिसका अर्थ है चुने हुए मार्ग पर न चल पाने की प्रवत्ति. अक्रेशिया से ग्रस्त सभी मनुष्यों में स्पष्ट लक्ष्य का अभाव, अनैतिक या छोटे उपायों द्वारा लक्ष्य प्राप्ति की इच्छा, और असफलता का काल्पनिक भय पाया जाता है.

आइए जान लेते हैं कि इस पर विजय प्राप्त कैसे की जाए. सबसे पहले यह जान लें कि समस्याएँ शाश्वत हैं यानि वे हमेशा थीं, हैं, और रहेंगी. समस्या को बुरा मानने का विचार ही सबसे बड़ी समस्या है. हम हमेशा सुख चाहते हैं. यही मन को अशांत करता है. अल्प मात्रा में संतुष्टि का होना भी अनिवार्य है क्योंकि यह हमें अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए साहस और उत्साह देता है.

दूसरी बात, नियति ने आपके लिए कुछ चीज़ें निर्धारित कर रखी हैं. ब्रह्मांड की समस्त शक्तियाँ आपके पास उन चीज़ों को पहुँचा सकती हैं यदि आप उन्हें निर्देशित करें. अपनी बिखरी हुई ऊर्जा को यदि एक बिंदु पर एकाग्र किया जाए, तो उस विषय पर पकड़ बनाना कोई कठिन काम नहीं है.

अक्रेशिया पर विजय प्राप्त करने के लिए मनोबल को बढ़ाना होगा. व्यर्थ की बातें, निरूद्देश्य कार्य, कामुक कल्पनाएँ, मनोरंजन के साधनों की अधिकता, एवं दूसरों के दोष ढूँढने में मानसिक ऊर्जा का अपव्यय होता है. इनके प्रति जागरूक होकर इनसे बचना होगा. सबसे बड़ी बात: संकल्प शक्ति को गहराना होगा. वरना आदतें छूटेंगी तो, लेकिन फिर वे वापस आती रहेंगी. और फिर विली रोजर्स की भाँति आप कहेंगे: "अजी, सिगरेट छोड़ना कौन सी बड़ी बात है! मैं सैकड़ों बार छोड़ चुका हूँ."

Photo: Sachin Nougariya

My Father's Failed Experiment

Surya Dev Ranjan

Painting: Pawan Kumar

In my childhood, I was the subject for a strange experiment. The experiment was running on a belief of my ambitious father: His son's birth was not for a normal reason, but was a miracle. No doubt, he wanted to make me very successful. But his definition of success was very narrow; it had no room for passion.

Moreover, my father treated me as an extraordinary child. He believed that my birth had a direct connection with the lord Surya, and He had gifted me to my father. Secondly, my family claimed that I never crawled like other normal toddlers, but directly started walking. Lastly, my parents did not have to train me the hard way: I was very docile.

One day my father came to me with a very smiling and proud face, and handed me a form. I read something written on the top of the form "Admission Form", beneath it "Indian Military School". "You will clear this entrance exam and you will be a successful person." The belief was

clear to me. Now, according to my father, if I passed that exam and spent the most precious years of my childhood living away from my family, I would become a successful person.

From the next day, my father started training me like him: like an army officer. He arranged three terrific home tuitions for me. TERRIFIC 1: 4:30 a.m.-6:00 a.m.; TERRIFIC 2: 3:00 p.m.-4:00 p.m.; and at last TERRIFIC 3: 7:00 p.m.-8:00 p.m. For an 11 years old cute child it was a tiring labour. And those teachers also got bored.

Even then, fighting with all of those odds and pains, I cleared the written exam. Now my father's dream seemed close to realization. On that day, his broad army chest might have broadened by two more inches. I was also very happy, not with my success, but with the thought that I would get rid of tuitions; and I would get to enjoy evening games with my peers.

But no! There was one more horrible obstacle: The interview.

Again, my father fixed evening coaching classes for me. It was supposed to help me in improving my English and to enhance my ability to interact with new people. But this time, I got a very different teacher. If I close my eyes, I can easily recall his face in detail: A tall, thin, fashionable, long-haired, hat-wearing man with painted nails and lipstick on lips! A very strange, but a handsome gentleman. He was a professional singer. I used to go to his place. On seeing all of his musical instruments, I felt an urge for music. (Oh, I just forgot to mention that I had and still have a very strong interest in singing.) I always wanted to learn music from him, but I had to focus on communication skills. Aah! Boring.

I wasted my precious years in a useless labour as neither I could crack the interview nor learn music then. My father's experiment, too, failed.

As dreams, whether fulfilled or unfulfilled, fade away from our lives, so was my father's. Thereafter, I lived my life as a normal kid, not a divine one. And, yes, I did follow my passion and learnt a bit of music later in my life.

Freeze and Release

Shweta Suman

"Presenting a 9-year old, extremely beautiful and elegant Kathak dancer Shweta Suman," so that was how I was introduced on the stage of a huge auditorium, jam-packed with almost 1000 people. For the first time in my life, I found myself standing in front of unfamiliar faces, gazing at me. Though I had performed a few times at school, but this was different. It was not a poetry recitation or storytelling competition with a bunch of school kids, it seemed much bigger and very serious indeed.

Now if I think of it, it was probably a miniature of India's Got Talent, for people from different backgrounds and age groups were there to showcase their talents. Till today I don't know how I ended up being there. For all I remember is that one day when I was on my way back home from my Kathak class, my father took me to an ice cream parlour and got me my favourite ice cream flavour.

One thing you need to know about my father is that he is a witty old man, and, being his usual self, he asked me to perform at the talent show being organized by the Air Force Creative Committee. Another thing that you should know about me is that I have a sweet tooth which means I cannot resist anything that's sugary and sweet; and, for that matter, even sugar-coated words. So I agreed instantly.

I think I was bribed by my father. And the funny thing is that I can still be convinced for anything if you offer me an ice cream with a scoop of caramelized words.

So, coming back to the D-Day, everything was going smooth. My overexcited mother was panicking about, getting me ready on time. My father was playing the hyperactive paparazzi, clicking my pictures from every angle possible. And if you are wondering how I was doing in the middle of all this chaos, then, my friend, need I remind you that I was just a 9 year old kid? Obviously, I was just excited for putting on makeup for the first time. (Well, yeah, that's the biggest fantasy of every little girl in the world.)

However, after hours of drowning in panic and excitement we were somehow able to reach the venue on time. I was still in my zone and relishing my fairy tale moment. I was already soaring high in sky with all the compliments that I received the moment I entered the backstage.

My mother was more nervous and worried than I was. My dance was the opening act of the show. Fifteen minutes before my performance, my father came to me and said, "When you go on the stage, you might see a huge crowd in front of you, people you have never seen before. But remember, they all are there to see you dance. So just go on the stage and show them your dancing skills."

Now at this point in any Bollywood movie, the child would suddenly get infused with confidence. But since life is not a Dharma production movie, obviously I got nervous for the first time since the day I had agreed to perform. It was that very moment when I experienced what is commonly known as stage fright. I wanted to sneak out of the backstage and run all the way back home. But I couldn't for my equally nervous mother was holding my hands so tightly that even handcuffs would fail if compared to the grasp of her hands.

Fifteen minutes later I was standing on the stage. The stage had turned into a gallows. I had set my gaze on the entrance door to escape the gaping eyes of the audience. I wished I had known what fate had in store for me.

The music was played and I began my performance. And, then, came the terrifying moment without even knocking. A minute into the performance and all of a sudden, due to some technical snag, the music stopped. I stood there – frozen to death. The only thing that came into my mind was to immediately run backstage. And as I was about to do so the little pep talk that my dad had given me a few minutes earlier popped up in my head again. It is then that I decided to stay on stage, and look in the eyes of the audience to convey to them that if they were there to see me dance, then they wouldn't leave the auditorium disappointed.

I stood there for one full minute, waiting for the glitch to be fixed. And then the organizer of the event apologized for the snag, appreciating the confidence of the 9 years old girl who faced it like a pro. The music was played again, and, channeling my inner Aishwarya Rai, I danced my heart out on a hit single of one of the greatest romantic tragedies Devdas.

Is it possible that I can still hear the echo of the applause that I received that day? Well, I can't be sure of that. But one thing that has stayed with me from that day is that you should hold on to your confidence when things don't seem to go your way. If you do, circumstances will definitely get favourable one day.

Painting: Satish Chadar

The Smile That Breathed New Life in Me

Abhishek Bhau

The sun was playing hide and seek on that chilly day. People were swarming and buzzing like mosquitoes all over the place. As usual, beggars were playing the role of spoilsports. There was nothing good about that morning.

Along with my cousins, I was headed towards the Hard Rock Cafe, Saket. As per our daily routine, we had tea first from our favourite place and then we took a cab. Now we were all set to go tête-à-tête with another manager, being already rejected by kazillions of managers.

On my way, I was reminiscing about the status of my life a couple of years ago. I was this fun guy whom people had conferred the title of "stress buster". I was a public figure back then. Every second person would shout FOG (my rock band) on catching a glimpse of me or any of my bandmates. Parties were dead without us.

Suddenly there was the cacophony of the screeching of the brakes. "Hey Bhagwaan! this traffic jam always gives a hard time," cried the cab driver. His hoarse voice woke me up from my unbridled reverie. He further stressed, "These jams are just a result of the ignorance of the people about the traffic rules. They don't even know the basics of crossing a road."

In the meantime, a girl of 12-13 years approached our window. "One rose for 20 bucks, two for 30," shouted she with zeal. She was clad in a simple frock and was barefoot. And we were shivering even in our leather jackets. It was an ironic moment. Top grain leather and pure cashmere cable knit socks were no match for her angelic soles. And that gave solace to me.

Despite her being so scarcely dressed, she possessed a smile that never left her face. Some were just like me who gave a cold stare to the girl while some were kind enough to at least buy one rose.

"Ask her the way. She looks like a local," chimed in the guitarist of my band. I sneaked my head out of the window like a cock and looked at her with inquiring eyes. I was totally mesmerized by the girl's persona. As if she was not from this world. She appeared to be a celestial figure. The smile never left her, even when the rate of rejections was much more than acceptance. Her smile was supplying me such amount of energy that I swiftly felt that I was turning into a superhero.

"Where is the way?" I asked her. She pointed us towards the right direction. At that moment the jam cleared. The driver dashed on towards the destination.

I felt a new life bursting within me. I turned back and tried to catch a glance of her blissful smile. The girl was back in her business, and she was smiling.

Photo: Vaibhav Agrawal

The Broken Bow

Vivek Tomar

The fog of Chilaun was impenetrable. Two kids had gone missing in the dense fog. Their starved bodies were found weeks later. It was now accepted by the villagers that the fog had come to stay. When Ballu asked his mother why it wouldn't wither away, she didn't really have an answer. It isn't a secret that Himachal is called the land of Gods, but it was not known that the local God who was the caretaker of Chilaun was furious with it. There were so many little hearts aching in Chilaun that the voices crying out in pain and the phony prayers were deafening to Him. One day, the clamour grew so loud that the God summoned fog from the other world and poured it on Chilaun as a punishment to muffle the voices. But whenever even one little heart would stop aching, the fog would subside for some time.

One such day was when Ballu was playing with other children in the unsown paddy fields. Ballu was the oldest son of three in the only dalit family of Chilaun. He was never allowed to play with the other kids because of his caste. Ballu's grandfather, Kundan, was the great archer who had fought alongside the ruler of his time. Soon after his death, his valour and contribution were forgotten. The only thing left of him was his bow. The family was again seen as dalits.

That day, Ballu had furtively snuck the bow with him. The other kids and the sahukar's (moneylender) son, Manoj, were fascinated by it. They agreed to let Ballu and his little brothers play with them, ignoring their parents' death threats. Ballu had been bullied before because of his social status. He had seen people treating him differently. This little game of I-Spy meant the world to him. His little heart stopped aching while playing. The God must have smiled upon watching them play, for the fog subsided and the sweet sunshine shone over Chilaun.

The unsown paddy fields were filled with rainwater and the sunlight had made the water warm. All the children including Ballu played all sorts of games there. They were all drenched in muddy water, but nobody seemed to care. It was the perfect day till then. Ballu hadn't seen Manoj in a while, so he looked around and saw him trying to stretch the bow almost beyond its capacity. He started running towards Manoj, fearing the worst and shouting at the top of his voice when he heard a crack and the bow broke into two pieces.

Before Ballu could say anything, Manoj grew contentious and started blaming Ballu for bringing the bow there in the first place. He said that a low life like Ballu should have never been allowed to play with them. Ballu couldn't take all this, and he pushed Manoj in anger. This was enough for Manoj to get out of the situation, and he started crying and ran home to his father.

He fed him the twisted narrative, and Manoj's father came with him to the paddy fields. He stepped up his pace as he saw Ballu and, before Ballu could utter a word, slapped him across his face, and yanked him by his arm while spewing obscenities.

Ballu was overwhelmed with so many emotions that he didn't have words to tell his mother, Tulsi, what had happened. His feelings found an outlet in tears, and somehow with choking sobs he told her the story. He wanted her to come with her and fight from his side like Manoj's father had done. He really needed a guarding parent.

But to his dismay, she started hitting him with her muddy hands, covered in paste, with tears in her eyes. "We're not equal to them. Why don't you understand? I cannot fight for you. We had lost when we were born." Tulsi broke down in tears after this and hugged her son tight. He felt comfort in his mother's embrace, but his little heart had started aching once more. Fog engulfed the village again. Roaring thunder startled the napping villagers. The grains, blankets, and pickles were taken inside. The God's tears came down as rain.

Photo: Abhay Mishra

Understanding the Universe through Mathematics

Dr. Sarika Verma

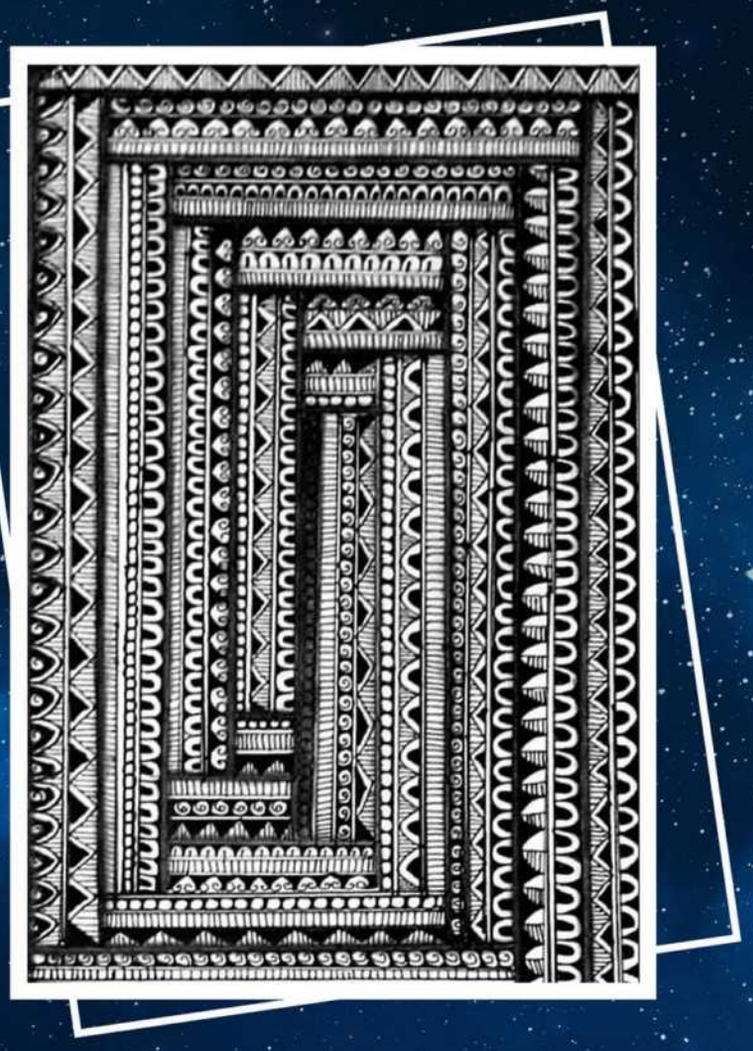

The curiosity to explore the unknown has helped humankind to unfold many mysteries of the universe. Still, we are nowhere close to understanding the complexity of the universe. It is evident that the universe has a design. One such design is called the "divine proportion". While every pattern in the universe does not possess the divine proportion, it is still a bigwig.

To understand the divine proportion, one must understand the "Fibonacci sequence". It is a recursive sequence, generated by adding the two previous numbers in the sequence, i. e. 0, 1, 1, 2, 3, 5, 8, 13, 21, 34… The quotient of the adjacent Fibonacci numbers possesses a remarkable proportion, roughly 1.618. It is known as the divine proportion or the Golden ratio.

The divine proportion in the universe can be found in the ideal packing arrangement in flower petals that allows the best possible exposure to sunlight. The ratio of the number of female bees and the number of male bees in any given hive is 1.618. Sunflowers, which have opposing spirals of seeds, have a divine proportion between the diameters of each rotation. Leonardo da Vinci has incorporated divine proportion in his paintings like Mona Lisa.

The divine proportion has captivated mathematicians, artists, designers, and scientists for centuries. It can be used to describe the proportions of atoms to the most advanced patterns in the large celestial bodies. Mathematics is, indeed, the language of the universe.

Sketching: Pragati Khaira

Power of Meditation

Dushyant Kumar Goulia

I have been thinking for a long time that several wise men like Kabir and Ravidas were not formally educated, and yet they taught us valuable lessons. Many of these are being taught in schools and colleges. Even many students pursue PhD on them.

It is quite astonishing that intellectuals, scholars, thinkers are researching on them. Where did these "uneducated" people get their knowledge if not at educational institutions? What is the worth of their knowledge?

Well, they turned inwards. They explored their inner beings through meditation. They did intense sadhana; lived disciplined lives; some followed the path of devotion. And they discovered mysteries that are beyond this world. They got access to a form of knowledge that transcends all human knowledge. They realized within themselves the cosmic consciousness and its immense beauty.

This is the power of meditation. Sitting silently, focused and relaxed, a meditator can discover the highest truth of existence.

Painting: Pawan Kumar

Journey of Kavya Foundation

Drawing Event

2011

Plantation

2012

Stationery Donation

2013

Blanket Donation

2015

Shoes Donation

2014

Celebrating Togetherness

2016

Plantation
2017
2020
Corona Relief Work, Yog Camp, Plantation
2022
GRAMMAR
NOUN
AND ITS
TYPES
Dr. Kapil Chaudaha
सृजन संगम
पक्षी संरक्षण
Grammar Videos, Srijan Sangam Event,
Bird Protection
Department of English
DAV University
Presents
Based on a True Story
Anubhuti
(अनुभूति) A TALE OF QUEST
A film by Kapil Chaudaha
2018
Yog Camp, Movie Launch "Anubhuti"
A COMEDY FILM ON SOCIAL MEDIA
The Facebook Fever
2019
Movie Launch "The Facebook Fever",
River Cleaning
THE DREAM WATCH
2021
Building Forest Water Tanks,
Movie "The Dream Watch",
Plantation, Forest Cleaning

Sudhanshu Tiwari

Nistha Agarwal

Satyank Mishra

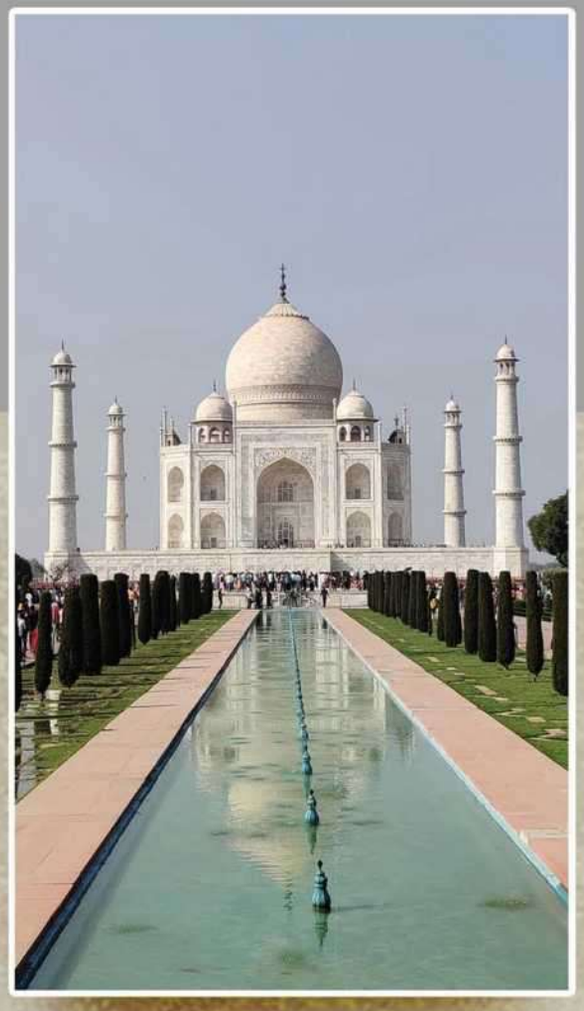

Shubham Tudaha

Vaibhav Agarwal

Takkal Chaturvedi

Satyank Mishra

Gopal Singh

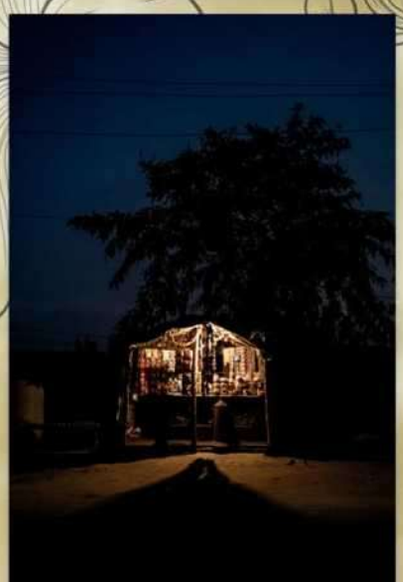

Keshav Singh

Esha Dewangan

Abhay Mishra

Vaibhav Agarwal

Sumit Sijaria

HarAmrit Kaur Brar

Sandeep Mishra

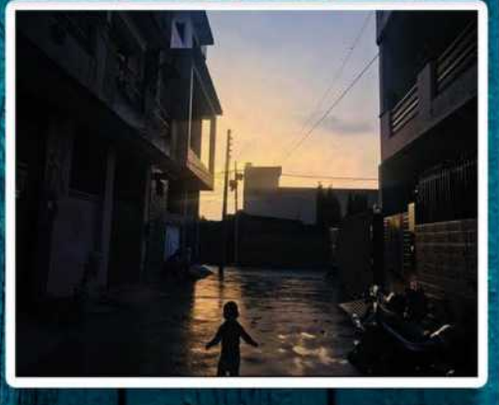

Devshree Bhargava

Ashish Thakur

Takkal Chaturvedi

Sumit Sijaria

Keshav Singh

Shubham Tudaha

HarAmrit Kaur Brar

Esha Dewangan

Ritika Sharma

Vaibhavshri Chauhan

Garima Bajaj

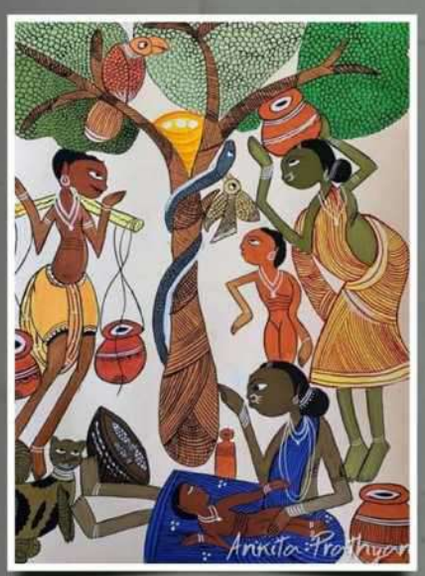

Ankita Prathyani

Diksha

Rashmi
Choudhary

Shalini Nougariya

Raman Gupta

Samarth Kalsi

Devshree Bhargava

Astha Dongre

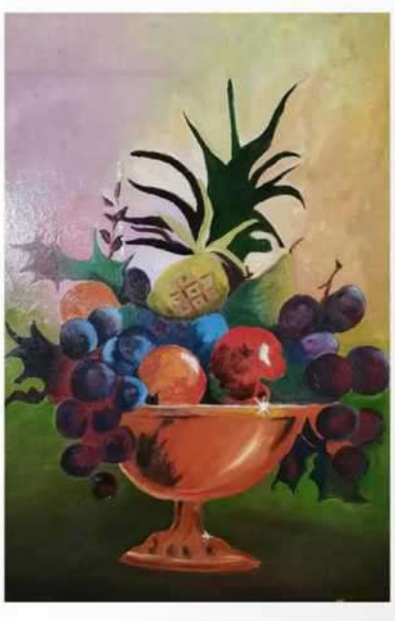

Rashmi Nikhra

Madhavi Goenka

Renu Bala

Harman Slohar

Parul Dengre

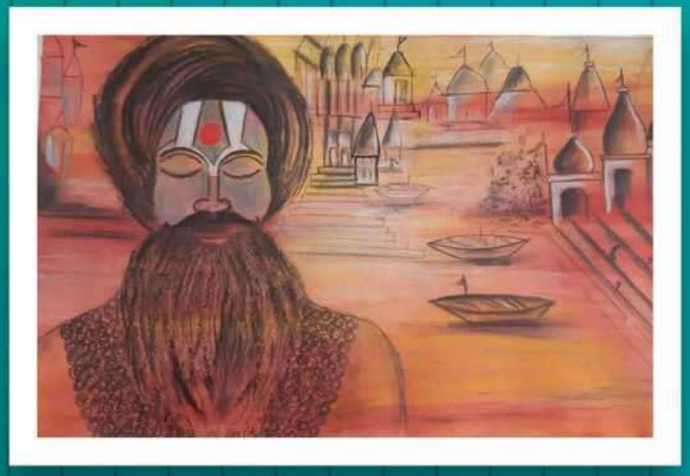

Shalini Nougariya

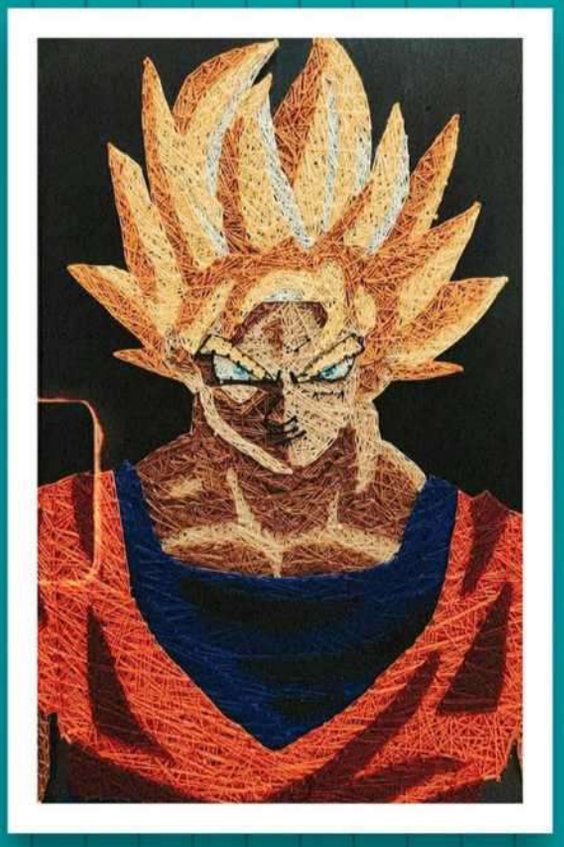

Madhavi Goenka

Ravneet Mann

Gayatri Verma

Khushboo Agrawal

Divya Jain

Arpana Jaiswal

Harman Slohar

Ashi Agrawal

Himanshi Vishwakarma

Ruchika Gupta

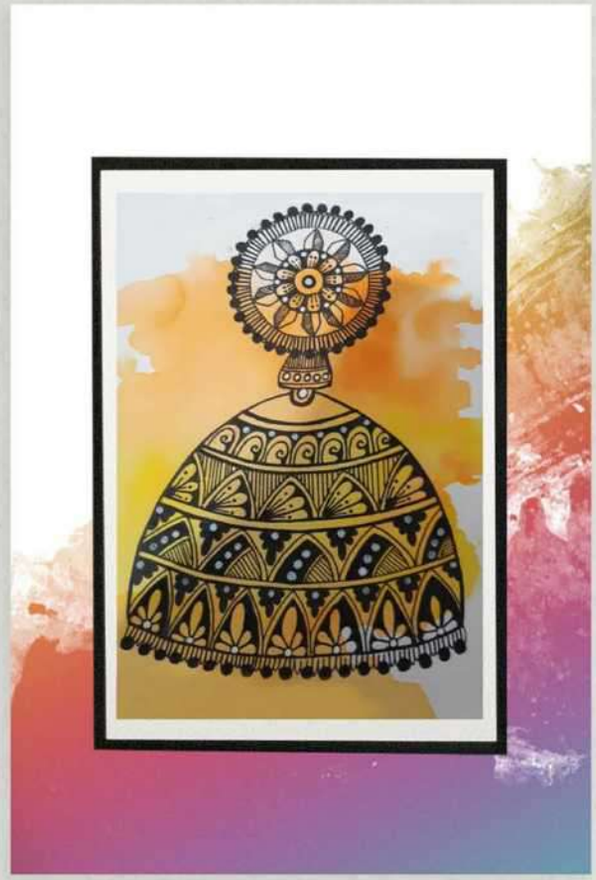

Renu Anjoria

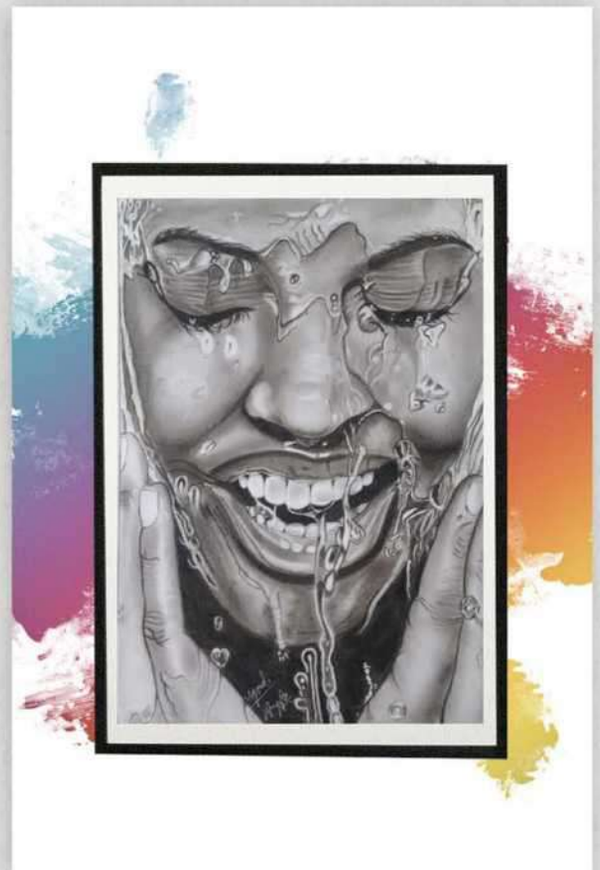

Khushboo Agrawal

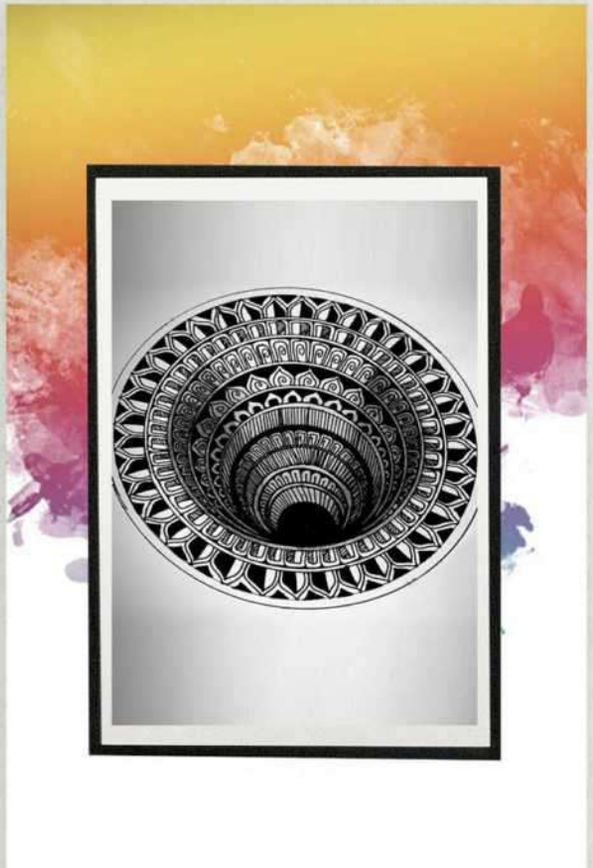

Pragati Khaira

Vidushi Vidhu

Soumya Gupta

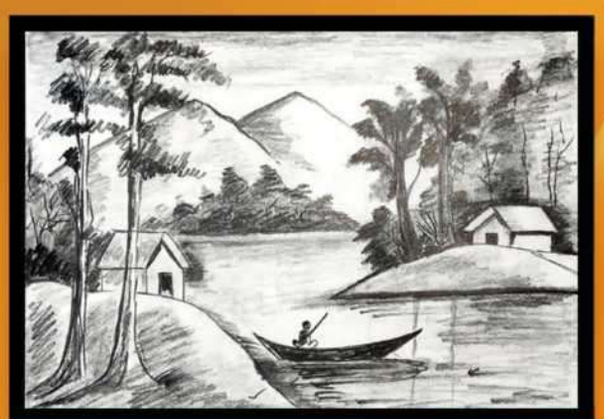

Suchita Agrawal

Aayush Saxena

Tanvi

Tanushree Patel

Shreya Khantal

Noordeep Kaur

Ankita Prathyani

Siddhi Mahajan Katti

Harshit Sharma

Divya Jain

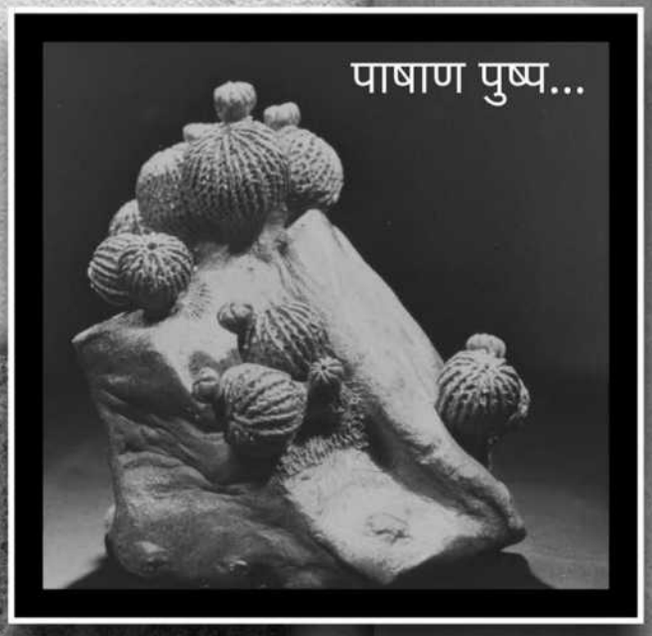

Kusum Gupta

S R Gupta

Akanksha Bramhane
Yati Gupta

Roli Gupta

Kratika Gupta

Palak Dhamija

Shilpa Kurewad

Shailesh Nindekar

Vibhuti Kharya

Shivani Singh

Tanvi

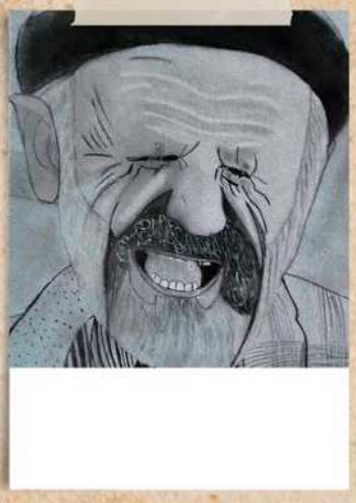

Shlok Pandey

नन्हे कलाकार

Anaika

Devang Gupta

Ansh Jain

Abhishek Tudaha

सुर तरंग

दीपाली शर्मा

वेदांशी सिंह

आरोही गुप्ता (2)

आरोही गुप्ता

आर्या गुप्ता

कामाक्षी तिवारी

दुष्यंत गौलिया

ऋषभ गुप्ता

मनवीर गौरव

तनिष्क सोनी

आशुतोष श्रीवास्तव

जयनील प्रजापति

हितैषी जैन

दिव्या अग्रवाल

साहिल

दीक्षा

नेन्सी डेंगरे

रश्मि नीखरा

रमनदीप कौर

रेवा

जीवा सिद्धार्थ जैन

नंदिनी दीक्षित

सुखमन

अनमोल शर्मा

सुमित नोटानी

सिया कलवानी

नीलम यादव

रिद्धि सोनी

देवांग गुप्ता

हर्षला पांडे

अनन्या विश्वकर्मा

पावनी सोनी

कलाकार परिचय

अंकिता प्रथ्यानी (27, मध्यप्रदेश) ने बी.एफ.ए. की डिग्री ली है और पेंटिंग में बेहद रूचि है.

अंश जैन (14, मध्यप्रदेश) 10वीं कक्षा में हैं. राज्य स्तरीय बैडमिंटन खेल चुके हैं।

अनन्या विश्वकर्मा (11, मध्यप्रदेश) 6वीं कक्षा में पढ़ती हैं.

अनमोल शर्मा (21, हिमाचल प्रदेश) इलेक्ट्रिकल में अपनी इंजीनियरिंग कर रहे हैं.

अनमोलजीत सिंह (26, पंजाब) एक मैकेनिकल इंजीनियर हैं. इन्होने अंग्रेज़ी में 1500 से ज़्यादा कविताएँ लिखी हैं.

अनाईका गुप्ता (8, मध्यप्रदेश) कक्षा 3 की छात्रा हैं.

अनामिका चौकसे (27, मध्यप्रदेश) सिविल सर्विसेज़ की तैयारी कर रही हैं. इनका पहला काव्य संकलन शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है. छंद विधान काव्य रचना में अंतरराष्ट्रीय स्तर तक इन्होंने विशेष पहचान बनाई है.

अपर्णा जैसवाल (33, मध्यप्रदेश) गृहणी हैं और स्केचिंग में रुचि रखती हैं.

अभय मिश्रा (28, जर्मनी) सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं, क्रिकेट, फोटोग्राफी, और रोबोटिक्स का शौक रखते हैं.

अभिनव नागार्जुन (22, हिमाचल प्रदेश) एम.ए. अंग्रेज़ी के छात्र हैं.

अभिषेक टुड़हा (40, मध्यप्रदेश) अपना ख़ाली समय कलाकृतियाँ रचने में बिताते हैं.

अभिषेक भाऊ (28, पंजाब) अंग्रेज़ी में एम.ए. हैं. लेखन में रुचि के अलावा एक प्रशिक्षित रंगमंच कलाकार और गायक भी हैं. इनके नाटकों का मंचन जालंधर, दिल्ली, हैदराबाद, मैसूर, प्रयागराज, फ़रूख़ाबाद, आदि में हो चुका है.

आकांक्षा विजय ब्राम्हने (24, महाराष्ट्र) कला व शिल्प निर्माण में समय बिताना पसंद करती हैं.

आकाश शर्मा (24, हिमाचल प्रदेश) एक इको-टूरिज़्म परियोजना में प्रोजेक्ट एसोसिएट के रूप में कार्य कर रहे हैं.

आदित्य नेमा (17, मध्यप्रदेश) 12वीं कक्षा के छात्र हैं. स्केचिंग में रुचि रखते हैं.

आयुष सक्सेना (21, हरियाणा) एम.सी.ए. कर रहे हैं.

आरोही गुप्ता (7, मध्यप्रदेश) दूसरी कक्षा में पढ़ती हैं.

आरोही गुप्ता (8, मध्यप्रदेश) तीसरी कक्षा की छात्रा हैं.

आर्या गुप्ता (18, मध्यप्रदेश) 12वीं कक्षा की छात्रा हैं. इनकी फूड ब्लॉगिंग और टूरिज़्म में विशेष रुचि है.

आर्यन ठाकुर (20, हिमाचल प्रदेश) अंग्रेज़ी साहित्य के छात्र हैं एवं कविता लेखन में अच्छी पकड़ रखते हैं.

आशी अग्रवाल (10, मध्यप्रदेश) 5वीं में पढ़ती हैं. पेंटिंग का शौक़ है.

आशीष ठाकुर (22, हिमाचल प्रदेश) जर्नलिज़्म और मास कम्युनिकेशन में पोस्ट ग्रेजुएशन कर रहे हैं.

डॉ आशुतोष कुमार (38, हिमाचल प्रदेश) हिमाचल विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग में प्रोफेसर हैं. इन्हें पर्वतीय विचरण एवं जीवन और आध्यात्म के सूक्ष्म तंतुओं की खोज का विशेष आकर्षण है.

डॉ सारिका वर्मा (37, पंजाब) डी.ए.वी. विश्वविद्यालय (जालंधर) में गणित विभाग में प्रोफेसर हैं.

डॉ विदुला सहजपाल (68, पंजाब) अंग्रेज़ी की एक सेवानिवृत्त प्रोफेसर हैं. लेखन के अलावा इन्हें चित्रकला में विशेष रूचि है.

आशुतोष भदौरिया (46, पंजाब) डी.ए.वी. विश्वविद्यालय (जालंधर) में इलेक्ट्रिकल विभाग के अध्यक्ष हैं. इन्होंने भारतीय दर्शन शास्त्र का सूक्ष्म अध्ययन किया है.

आशुतोष श्रीवास्तव (14, मध्यप्रदेश) 9वीं कक्षा के विद्यार्थी हैं और संगीत कला में रुचि रखते हैं.

आस्था डोंगरे (28, मध्यप्रदेश) भारतीय रेल्वे में कार्य करती हैं.

ईशा देवांगन (20, छत्तीसगढ़) कथक में बी.पी.ए. हैं. लेखन में भी विशेष रुचि है.

ऋषभ गुप्ता (16 , मध्यप्रदेश) को बचपन से वाद्ययंत्रों का शौक़ रहा है और अभी तबले में अपना डिप्लोमा कर रहे हैं.

एस आर गुप्ता (84, मध्यप्रदेश) ने अपना डिजिटल पेंटिंग का शौक़ भारतीय प्रशासनिक सेवा से सेवानिवृति के बाद शुरू किया. इस कला द्वारा इन्होंने जीवन के विविध विषयों को व्यक्त किया है.

सूर्यदेव रंजन (23, बिहार) एम.ए. अंग्रेज़ी के छात्र हैं. लेखन के अलावा अभिनय एवं गायन का भी शौक़ है.

कनिका पंघाल (23, हरियाणा) पंजाब विश्वविद्यालय (चंडीगढ़) से अंग्रेज़ी साहित्य में Ph.D. कर रही हैं. इन्हें JRF प्राप्त है.

कर्मिष्ठा (22, पंजाब) अंग्रेज़ी साहित्य की छात्रा हैं.

कामाक्षी तिवारी (19, मध्यप्रदेश) बी.पी.ए. कत्थक की छात्रा हैं. ये गायन में भी विशेष रुचि रखती हैं.

कुसुम गुप्ता (80, मध्यप्रदेश) 80 के दशक से सिरेमिक, पॉटरी, वुड-कार्विंग, बेल-मेटल वर्क, आदि कलाओं से जुड़ी रहीं हैं. इनकी कृतियाँ जहाँगीर आर्ट गैलरी (मुंबई), रूपंकर भारत भवन (भोपाल), रवींद्र भवन (भोपाल) जैसी प्रतिष्ठित दीर्घाओं में प्रदर्शित हुई हैं. इन्हें मूर्तिकला के लिए "द बॉम्बे आर्ट सोसाइटी" द्वारा "श्री देवकुमार पुरस्कार" से सम्मानित किया गया.

कृतिका गुप्ता (26, मध्यप्रदेश) की ड्राइंग, पेंटिंग के अलावा मेंहदी लेखन में विशेष रुचि है.

केशव सिंह (19, पंजाब) बी.एस.सी. केमिस्ट्री के छात्र हैं. फोटोग्राफी और संगीत से प्रेम है.

ख़ुशबू अग्रवाल (26, मध्यप्रदेश) एम.कॉम. की छात्रा हैं और कला से विशेष जुड़ाव रखती हैं.

गायत्री वर्मा (21, मध्यप्रदेश) चित्रकला की विद्यार्थी हैं.

गोपाल कुमार सिंह (20, झारखंड) मास कम्युनिकेशन के छात्र हैं. फोटोग्राफी में रुचि रखते हैं.

जयनील प्रजापति (28, कनाडा) पेशे से इंजीनियर हैं और संगीत कला में गहरी रुचि रखते हैं.

जसकीरत कौर (22, पंजाब) बी.डी.एस. अंतिम वर्ष की छात्रा हैं. ये साहित्य से गहरा जुड़ाव रखती हैं.

जीवा जैन (4, मध्यप्रदेश) नर्सरी कक्षा में है.

टक्कल चतुर्वेदी (42, मध्यप्रदेश) टाटा क्लासेस में प्रदेश प्रबंधक है. आप फोटोग्राफी में विशेष आनंद लेते हैं.

तनिष्क सोनी (16 , मध्यप्रदेश) पढ़ाई के साथ साथ संगीत में रुचि रखते हैं.

तनुश्री पटेल (19, मध्यप्रदेश) बी.ए. की छात्रा हैं.

तन्वी (19, पंजाब) स्नातक की डिग्री कर रही हैं. इन्हें ड्राइंग और डूडलिंग का बहुत शौक़ है.

दिव्या अग्रवाल (53, कर्नाटक) ने अपनी इंजीनियरिंग के दौरान हिंदी कविताएँ लिखना शुरू किया. कई वर्षों तक अमरीका में माइक्रोसॉफ्ट, इंटेल, इत्यादि कंपनियों में कार्य किया. लेखन के अलावा गायन में भी रूचि रखती हैं.

दिव्या जैन (16, मध्यप्रदेश) 12वीं कक्षा की छात्रा हैं, और चित्रकला में ख़ासी दिलचस्पी रखती हैं.

दीक्षा (26, पंजाब) माइक्रोबायोलॉजी में एम.एस.सी. कर रही हैं.

दीक्षिता शर्मा (22, हिमाचल प्रदेश) अंग्रेज़ी से एम.ए. कर रही हैं.

दीपक बहरे (30, महाराष्ट्र) मैकेनिकल डिज़ाइन इंजीनियर हैं. चित्रकला में विशेष रुचि है.

दीपाली शर्मा (23, पंजाब) एम.एस.सी. की छात्रा हैं. गिद्दा और चित्रकारी से लगाव रखती हैं.

दुष्यंत गौलिया (21, मध्यप्रदेश) बी.पी.ए. के प्रथम वर्ष के छात्र हैं, और तबला वाद्ययंत्र में ग्रेजुएशन कर रहे हैं. ये हारमोनियम में भी सिद्धहस्त हैं.

देवश्री भार्गव (26, पंजाब) फिल्म स्टडीज़ पर Ph.D. कर रही हैं. साहित्य, फोटोग्राफी, और पेंटिंग में अपना समय बिताती हैं.

देवांग गुप्ता (14, मध्यप्रदेश) 8वीं कक्षा के छात्र हैं.

नंदिनी दीक्षित (20, मध्यप्रदेश) बी.ए. कर रही हैं. चित्रशिल्प में विशेष रुचि रखती हैं.

निष्ठा अग्रवाल (22, राजस्थान) पेशे से फैशन डिज़ाइनर है. फोटोग्राफी में रुचि रखती हैं.

डॉ नीलम यादव (38, उत्तरप्रदेश) आगरा विश्वविद्यालय में अंग्रेज़ी विभाग में प्रोफेसर हैं.

नूरदीप कौर (20, पंजाब) अंग्रेज़ी से बी.ए. कर रही हैं. विभिन्न भाषाएँ सीखना पसंद करती हैं.

नेन्सी डेंगरे (21, मध्यप्रदेश) ने संगीत वादन में 2-3 साल प्रशिक्षण लिया है.

पलक धमीजा (24, पंजाब) हस्त शिल्प और कला में गहरी रुचि रखती हैं.

पलवी (24, कनाडा) एक उभरती हुई लेखिका हैं. IEO (International English Olympiad) 2015 में स्वर्ण पदक विजेता हैं.

पावनी सोनी (14, मध्यप्रदेश) 9वीं कक्षा की छात्रा हैं और कथक में डिप्लोमा कर रही हैं.

पारूल डेंगरे (24, महाराष्ट्र) एल.एन.टी. में काम करती हैं. इनकी नृत्य में विशेष रुचि है.

प्रगति खैरा (27, मध्यप्रदेश) इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियर हैं. चित्रकला में विशेष रूचि है.

मनप्रीत सिंह (23, पंजाब) एम.ए. अंग्रेज़ी के छात्र हैं. साहित्य के अलावा संगीत में भी रुचि रखते हैं.

मनवीर गौरव (21, झारखंड) अपनी बी.एस.सी. (शारीरिक शिक्षा) में कर रहे हैं.

मयंक सेमवाल (28, उत्तराखंड) लेखन के अलावा एक दक्ष संगीतकार हैं. विभिन्न भाषाओं में गीत गा चुके हैं. शिमला, चंडीगढ़, देहरादून, गुवाहाटी, नेपाल में कार्यक्रम किए हैं.

महक जोशी (19, पंजाब) बी.बी.ए. की छात्रा हैं. इनकी अभिनय और कविता लेखन में रुचि है.

माधवी गोयंका (20, मध्यप्रदेश) दी आर्ट स्पेस हैंडीक्राफ्ट बिजनेस में जुटी हैं. नृत्य में भी रुचि रखती हैं.

मोहित सिंह (24, कनाडा) अंग्रेज़ी में बी.ए. हैं. ये उर्दू और पंजाबी कविता की अच्छी समझ रखते हैं.

यति गुप्ता (9, मध्यप्रदेश) कक्षा 4 की छात्रा हैं. ये नृत्य और ड्राइंग में विशेष रूचि लेती हैं.

रमनदीप कौर (20, पंजाब) इनकी एक कविता ट्रान्सेंडैंटल नामक बुक में प्रकाशित हुई है.

रवनीत कौर (21, पंजाब) बी.डी.एस. की छात्रा हैं.

रश्मि चौधरी (30, हरियाणा) अंग्रेज़ी की एक शिक्षिका हैं. इनकी चित्रकला में विशेष रुचि है.

रश्मि नीखरा (63, दिल्ली) एक परिपक्व चित्रकार होने के साथ गायन, मशीन एम्ब्रॉयडरी, और क्ले मॉडलिंग भी करती हैं.

राम प्रकाश तिवारी (64, मध्यप्रदेश) भारतीय प्रशासनिक सेवा में कार्यरत थे. उनके 6-7 काव्य संकलन प्रकाशित हो चुके हैं.

रमन गुप्ता (12, मध्यप्रदेश) 8वीं कक्षा में हैं और पेंटिंग में रुचि रखती हैं.

रीतिका शर्मा (18, मध्यप्रदेश) इंजीनियरिंग की छात्रा हैं.

रिद्धि सोनी (17, राजस्थान) सात साल की उम्र से संगीत कला से जुड़ी हैं, और 5-6 साल से प्रशिक्षण भी ले रही हैं.

रुचिका गुप्ता (21, पंजाब) बी.टेक. की छात्रा हैं. लेखन एवं मंडल आर्ट का भी शौक़ है. राज्य स्तरीय वक्ता सम्मान से पुरस्कृत हैं.

रेनू अँजोरिया (23, पंजाब) बी.ए.एल.एल.बी. कर रही हैं. हस्तकला से अपनी रचनात्मक ऊर्जा व्यक्त करती हैं.

रेनू बाला (25, पंजाब) को कला से गहरा लगाव है, और इन्होंने इसे व्यवसायिक स्तर पर अपने जीवन में उतारा है.

रेवा गुप्ता (11, मध्यप्रदेश) अपने परिवार की कला की विरासत और संगीत प्रेम को आगे बढ़ाते हुए संगीत में प्रशिक्षण ले रही हैं.

रोली गुप्ता (29, मध्यप्रदेश) सीनियर प्रोडक्ट डिज़ाइनर (जयपुर) हैं. और नृत्य एवं पेंटिंग इनकी आत्म अभिव्यक्ति के माध्यम हैं.

विदुषी विधु (20, हिमाचल प्रदेश) एम.ए. अंग्रेज़ी की छात्रा हैं. लेखन व चित्रकला में विशेष रुचि है.

विभुति खरया (42, मध्यप्रदेश) पेंटिंग और स्केचिंग में रुचि रखती हैं.

विवेक तोमर (22, हिमाचल प्रदेश) अंग्रेज़ी में एम.ए. कर रहे हैं.

वेदांशी सिंह (19, पश्चिम बंगाल) अंग्रेज़ी में बी.ए. कर रही हैं. लेखन में रुचि रखती हैं.

वैभव अग्रवाल (26, राजस्थान) सॉफ्टवेयर डेवलपर हैं, और फोटोग्राफी और पाक कला में निपुण हैं.

वैभवश्री चौहान (19, मध्यप्रदेश) बी.टेक. की छात्रा हैं. इन्हें विभिन्न भारतीय कलाएँ पसंद हैं.

शालिनी नौगरहिया (29, मध्यप्रदेश) बी.एफ.ए. फेविक्रिल सर्टिफाइड प्रोफेशनल हैं.

शिखा भट्टी (23, हिमाचल प्रदेश) अंग्रेज़ी से एम.ए. हैं. लेखन और नृत्य से विशेष प्रेम है.

शिल्पा कुरेवाड़ (27, महाराष्ट्र) को बॉटल आर्ट, मंडला, नेल आर्ट, पेपर क्राफ्ट में महारत हासिल है, और ये इनका व्यवसाय भी है.

शिल्पा नौगरहिया (27, महाराष्ट्र) ने फाइनेंस में एम.बी.ए. किया है. इनको साहित्य में ख़ासी रूचि है.

शिवानी सिंह (21, मध्यप्रदेश) स्केचिंग में रुचि रखती हैं.

शुभम टुड़हा (32, मध्यप्रदेश) एक्स्ट्रा मार्क्स में डिप्टी मैनेजर हैं. इनकी फोटोग्राफी के साथ बाग़वानी और साहित्य में रुचि है.

शुभांगी विश्वकर्मा (28, मध्यप्रदेश) रेल्वे विभाग, कटनी, में कार्यरत हैं.

श्रेया खंताल (17, मध्यप्रदेश) 12वीं कक्षा की छात्रा हैं, पेंटिंग, ड्राइंग के अलावा मेंहदी से विशेष लगाव है.

श्लोक पांडे (13, मध्यप्रदेश) 8वीं कक्षा के छात्र हैं.

श्वेता सुमन (23, बिहार) पेशे से बैंकर हैं. पठन एवं लेखन में विशेष रूचि है।

संदीप मिश्रा (21, बिहार) बी.ए. करने के बाद चित्र-शिल्प में समय बिताते हैं.

सचिन नौगरैया (30, मध्यप्रदेश) सैमसंग मोबाइल में सेल्स एक्ज़ीक्यूटिव हैं. ये फोटोग्राफी से जुड़े हैं.

सतीश चड़ार (30, मध्यप्रदेश) एक कला शिक्षक हैं.

सत्यांक मिश्रा (28, बिहार) IL&FS इन्वायरनमेंट सर्विसेज़ में प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर हैं. फोटोग्राफी में रुचि रखते हैं.

सावन भाऊ (27, पंजाब) रिफायर कम्पनी के एक सहसंस्थापक और प्रोडक्ट मैनेजर हैं. फोटोग्राफी के अलावा लेखन का भी शौक़ है.

साहिल (21, पंजाब) बी.ए. (वोकल) कर रहे हैं. वाद्य यंत्रो में गिटार एवं हारमोनियम सीख रहे हैं.

सिद्धि महाजनकट्टी (23, कर्नाटक) एर्किलिक पेंटिंग में विशेष रुचि रखती हैं. ये एक डाटा साइंटिस्ट हैं.

सिया कलवानी (36, मध्यप्रदेश) नृत्य से बेहद लगाव है. ये राष्ट्रीय स्तर तक अपनी कला का प्रदर्शन कर चुकी हैं.

सुखमनजोत कौर (18, पंजाब) अंग्रेज़ी से बी.ए. कर रही हैं. ये जिला स्तरीय स्केटिंग की खिलाड़ी है.

सुधांशु तिवारी (39, मध्यप्रदेश) पेशे से मैनेजर हैं. वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफी में महारत है. इनकी तस्वीरें नेशनल जियोग्राफिक, बी.बी.सी. (अर्थ), डिस्कवरी, जैसी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में छप चुकी हैं.

सुमित सिजारिया (32, बेल्जियम) TCS में सॉफ्टवेयर इंजीनियर के पद पर हैं, और फोटोग्राफी से बेहद लगाव रखते हैं.

सौम्या गुप्ता (15, मध्यप्रदेश) 9वीं की छात्रा हैं और इनकी चित्रकला में विशेष रूचि है.

हरअमृत कौर बराड़ (24, पंजाब) अंग्रेज़ी से बी.ए. हैं. बर्ड फोटोग्राफी में अच्छी पकड़ है.

हरमन सलोहर (27, पंजाब) डी.ए.वी. कॉलेज में मास कम्युनिकेशन पढ़ाती हैं. इन्हें स्केचिंग में विशेष रुचि है.

हर्षला पांडे (19, मध्यप्रदेश) ने कथक में 6 साल का डिप्लोमा किया है.

हर्षित शर्मा (13, पंजाब) बहुत छोटी उम्र में ही स्केचिंग में महारत हासिल कर रहे हैं.

हितैषी जैन (10, मध्यप्रदेश) 5वीं कक्षा में हैं.

हिमांशी विश्वकर्मा (17, मध्यप्रदेश) बी.कॉम. प्रथम वर्ष में हैं और पेंटिंग और फाइन आर्ट्स से विशेष प्रेम है.

Dr. Kapil Chaudaha
Founder

Ms. Deepa Gupta
Co-founder & President

Mr. Shubham Tudaha
Co-founder & Advertising Manager

Dr. Archana Agrawal
Co-founder & Special Advisor to the BOM

Mr. Prashant Vishwakarma
Co-founder & Vice President

Ms. Mamta Kalwani
Co-founder & Advertising Manager

Mr. Mangal Suhane
Co-founder & Project Manager for Field Projects

Ms. Pratiksha Goyanka
Co-founder & Member of Cultural Committee

Ms. Sheetal Gupta
Co-founder & Assistant Manager for Field Projects

Ms. Shubhangi Vishwakarma
Administrative Officer & Accounts Officer

Mr. Deepak Bahre
Manager, Website Management Committee

Mr. Pushpendra Singh
Accounts Officer

Ms. Shraddha Prathyani
Treasurer

Mr. Prabhanshu Vaishy
Secretary

Ms. Shikha Bhatti
Assistant Advertising Manager

Ms. Ratika Jasani
Project Manager for
Digital Projects

Mr. S D Ranjan
Assistant Advertising Manager

Ms. Rishika Sharma
Assistant Administrative Officer

Mr. Avinash Mishra
Deputy Secretary

Mr. Karanveer Singh
Assistant Advertising Manager

Miss Astha Gupta
Member of Cultural Committee

Ms. Surbhi
Assistant Manager for
Digital Projects

Mr. Shubham Dhiman
Assistant Manager for
Digital Projects

Mr. Karanvir Sidhu
Accounts Officer

KAVYA
FOUNDATION
A Poetry of Life

पक्षी संरक्षण

वृक्षारोपण एवं वन्य प्राणियों के लिए जलाशयों के निर्माण कार्य की सफलता के बाद, अब काव्या संस्था पक्षी संरक्षण के विषय पर कार्य करने की ओर अग्रसर है. आप सभी पक्षी प्रेमियों और संरक्षकों से निवेदन है कि आप अपनी जानकारी और अनुभव हमसे साझा करें, और इस अभियान को सफलतापूर्वक संपन्न करने में अपना सहयोग प्रदान करें.

Our Book

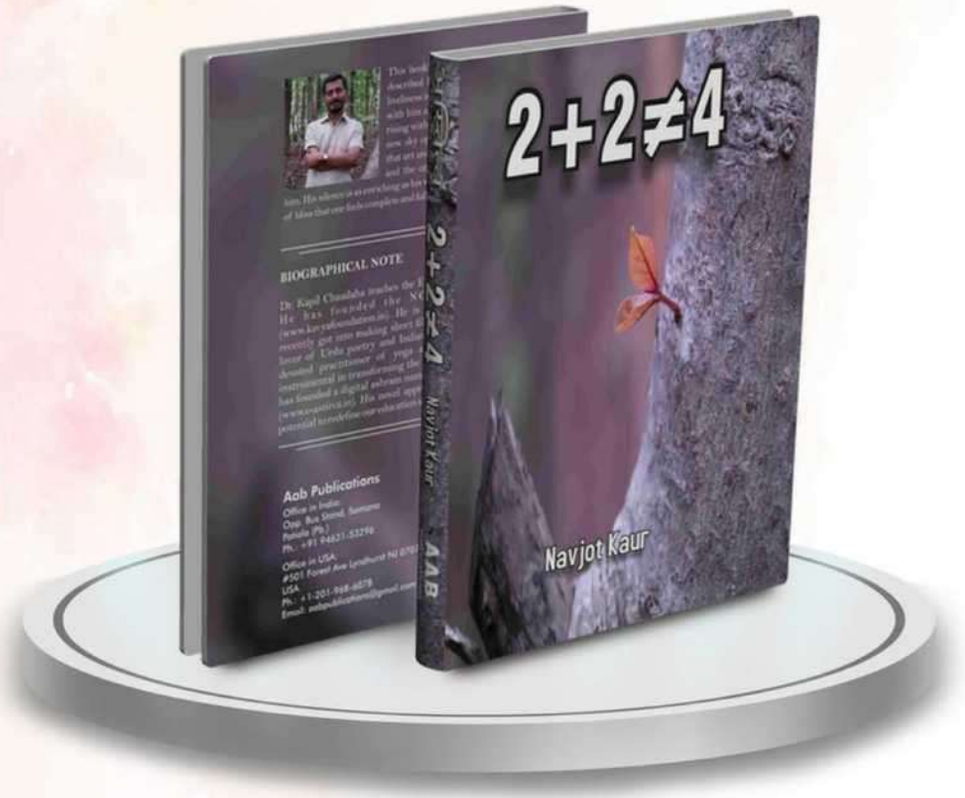

Book Title: 2+2≠4

A highly inspirational book, *2+2≠4* suggests some simple ways to live a carefree and creative life. The book is focused on the existing education system that needs to be more joy-centric than job-centric.

Available on Amazon.
To buy a copy, you can also contact : 79875 88158

KAVYA FOUNDATION
A Poetry of Life

सृजन संगम
कला और साहित्य का अनूठा मेला

A confluence of visual melodies and literary delights,
Sirjan Sangam encapsulates human beings' journey of love, labour, and liberty.

Dr. Nakul Kundra, Deptt. of English, University of Allahabad, Prayagraj

---

A wonderful and noble idea for creating lovely collections of visual art
and literature. Heartiest blessings to all.

Dr. Sameer Chaudhary, Child Specialist, Founder of Little Star Foundation, Katni (M.P.)

Srijan Sangam brings out what remains most neglected in the education system:
Creative talent. And it does so splendidly.

Saurabh Mehta, Producer & Content Creator, Bharti Films, Mumbai

---

A fantastic fun opportunity to enjoy different arts in a delightful relaxed setting.

Yukti Thakur, Fashion Stylist, Chapter 3 Films Studio, Pune.

Yoga & Meditation | Environment | Art & Creativity | Love

सजग रहें, स्वस्थ रहें।

www.kavyafoundation.in

Join Us : 7987588158

Kavya App